facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 09 जून 2025 ● वर्ष 6 ● अंक 46 ● मूल्यः 5 रुपए

माल्या के इंटरव्यू ने मचाया तूफान

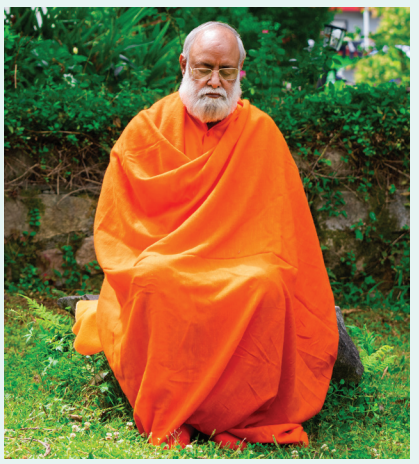

परमपिता परमात्मा और सदगुरूदेव जी अपने भक्तों पर कब, क्या और कैसे कृपा करते हैं, यह एक अलौकिक और अद्भुत रहस्य है, जिसे समझना अत्यंत कठिन है। यह समझ केवल उन्हीं को प्राप्त होती है, जिन पर उनकी विशेष कृपा होती है। कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब प्रभु अपने भक्तों की भक्ति और समर्पण की परीक्षा लेते हैं, और तत्क्षण कृपा का खजाना लुटा देते हैं।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी

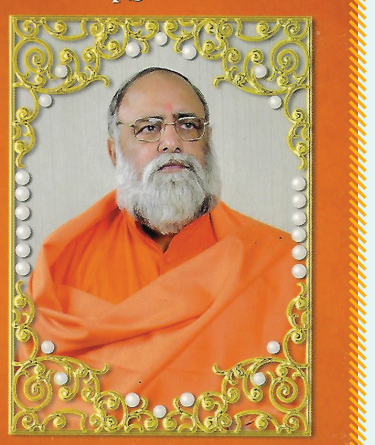

दिव्य पाठ से मस्तिष्क जाग्रत अवस्था में आ जाता है। मस्तिष्क में ज्ञान का प्रवाह विद्युत की भांति तरंगित हो उठता है। इसके विवेक को अकल्पनीय ऊर्जा मिलती है।

●

तथाकथित गुरु और संत हमें चिंतन नहीं देते बल्कि भयभीत कर के चिंता दे देते हैं। सच्चा गुरु वही है जो मनुष्य को चिताओं और भय से मुक्त करे।

●

भौतिक संपन्नता के बावजूद पश्चिम जगत के देश दुखी हैं। केवल अध्यात्म और दिव्या पाठ ही सच्चा सुख प्रदान करने में सक्षम हैं।

पानी को लेकर तनाव

पाक और चीन की भारत को पानी रोकने की संयुक्त चेतावनी

@ भारतश्री ब्यूरो

पाकिस्तान ने हाल ही में भारत को सिंधु जल समझौते को लेकर कई बार नाकाम कोशिशें की हैं। वे भारत पर दबाव बनाने के लिए ब्रह्मपुत्र नदी के पानी को रोकने की धमकी भी दे रहे हैं। पाकिस्तान का कहना है कि अगर भारत ने उनका पानी रोका, तो चीन भी ब्रह्मपुत्र नदी का पानी रोक सकता है। वहीं असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा का मानना है कि चीन का पानी रोकना भारत के लिए नुकसान की जगह फायदा साबित होगा।

पाकिस्तान ने क्या कहा और क्यों ?

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के विशेष सहायक राणा एहसान अफजल ने 30 मई को कहा कि अगर भारत ने उनका पानी रोका, तो चीन भी भारत का पानी रोक सकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर ऐसा हुआ, तो दुनिया जंग के संकट में पड़ जाएगी। इसके पहले 24 मई को भी कराची में पाकिस्तान के एक सीनियर असिस्टेंट ने इसी तरह की धमकी दी थी।पाकिस्तान का मानना है कि भारत द्वारा सिंधु जल समझौते को रोकना एक खतरनाक कदम है, जो भारत के लिए ही नुकसानदेह हो सकता है। उनका दावा है कि चीन इस अवसर का फायदा उठाकर ब्रह्मपुत्र नदी का पानी रोक सकता है और भारत को नुकसान पहुंचा सकता है।

क्या सच में चीन ने पानी रोकने की धमकी दी है ?

चीनी थिंक टैंक सेंटर के वाइस प्रेसिडेंट विक्टर झिकाई गाओ ने 1 जून को कहा कि यदि भारत ने पानी के मामले में विवाद बढ़ाया तो चीन भी उसी तरह प्रतिक्रिया कर सकता है। उन्होंने भारत को चेतावनी दी कि अगर वह दूसरों के खिलाफ कड़े कदम उठाता है, तो उसे भी चुनौतियों का सामना करना होगा। हालांकि चीन ने सीधे तौर पर पानी रोकने की धमकी नहीं दी, लेकिन उनके बयान से यह इशारा मिलता है कि जल संसाधनों को लेकर तनाव हो सकता है। भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान के साथ सिंधु जल समझौते को स्थगित कर दिया था, जिससे यह तनाव और बढ़ गया।

चीन वाकई ब्रह्मपुत्र नदी का पानी रोक सकता है ?

इस सवाल का जवाब है ,नहीं। नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर प्रसेनजीत बिस्वास कहते हैं कि भारत और चीन के बीच कूटनीतिक संबंध हैं और दोनों ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर सहयोग किया है। नदियां एक जीवित प्रणाली हैं और उन्हें संतुलित रखना जरूरी होता है। चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर एक बड़ा हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट बना रहा है जो अगले 12 सालों में पूरा होगा। इस डैम के जरिए चीन अपने क्षेत्र में पानी का प्रबंधन करेगा, लेकिन पूरा पानी रोकना संभव नहीं होगा क्योंकि इससे नदी का ऊपर का हिस्सा भी प्रभावित होगा।

बाढ़ का खतरा भी बढ़ सकता है

ब्रह्मपुत्र नदी चीन से निकलकर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से गुजरती है, इसलिए उसका बहाव चीन के नियंत्रण में है। अगर चीन पानी रोकता है तो गर्मियों में असम और अरुणाचल प्रदेश में पानी की कमी हो सकती है। इसके अलावा, चीन अचानक पानी छोड़ दे तो वहां बाढ़ का खतरा भी बढ़ सकता है।असम में हर साल बाढ़ आती है, जिससे लाखों लोग प्रभावित होते हैं। चीन का पानी रोकना बाढ़ को कम करने में मददगार हो सकता है, लेकिन अचानक अधिक पानी छोड़ना बड़ी तबाही ला सकता है।

मददगार हो सकता है चीन का पानी रोकना

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने बताया कि भारत में ब्रह्मपुत्र नदी का लगभग 30-35% पानी चीन से आता है, बाकी मानसून और सहायक नदियों से। मानसून के दौरान नदी का बहाव बहुत बढ़ जाता है, जिससे बाढ़ आती है। अगर चीन पानी का बहाव थोड़ा कम करता है तो असम में बाढ़ का खतरा घटेगा। इससे वहां के किसानों और स्थानीय लोगों को राहत मिलेगी। इसलिए चीन का पानी रोकना भारत के लिए पूर्ण रूप से नुकसानकारी नहीं, बल्कि कुछ परिस्थितियों में लाभकारी भी हो सकता है।

पाकिस्तान क्यों चीन की मदद लेकर भारत को धमकी दे रहा है ?

पाकिस्तान की यह धमकी एक मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने की कोशिश है ताकि भारत सिंधु जल समझौते को पुनः शुरू करे। प्रोफेसर बिस्वास के अनुसार, पाकिस्तान के पास इस बात का कोई ठोस आधार नहीं है कि चीन ब्रह्मपुत्र का पानी रोक देगा। चीन भी अपनी नदियों का पानी बंद करके भारत को नुकसान पहुंचाना नहीं चाहता क्योंकि दोनों देशों के बीच जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय स्थिरता के मुद्दे पर समझौते हैं।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

बेंगलुरु में मची भगदड़ का जिम्मेदार कौन?

@ मोहित प्रजापति

पब्लिक गैदरिंग का भगदड़ में बदलना क्या नया नॉर्मल बन गया है? जब मुख्यमंत्री और वीआईपी के लिए पूरा सुरक्षा घेरा होता है, तो आम जनता की सुरक्षा को भी उतनी ही प्राथमिकता क्यों नहीं दी जाती? कौन जिम्मेदार है इसका, जनता, जो ऐसे इवेंट को जान से बड़ा बना देती है, या प्रशासन, जिन्हें पता होता है कि लोगों के सेंटीमेंट्स क्या हैं, उसके बाद भी पुख्ता इंतजामात नहीं हो पाते?

भारत में लोगों की जान की कीमत क्या है? भगदड़ होती है, कई लोगों की जानें चली जाती हैं, आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चलता रहता है और बाद में एक जांच कमेटी बना दी जाती है। कई बार वह कमेटी एडमिनिस्ट्रेशन को दोषी देती है। जैसे 2014 में बिहार के गांधी मैदान में भगदड़ मची थी, तो उसकी रिपोर्ट में कहा गया था कि प्रशासन की गलती है। कई बार भारी बारिश और पैनिक को भगदड़ का कारण बताया जाता है, जैसे 2017 के मुंबई स्टैम्पेड में हुआ। अंत में ऐसे हादसे बस आंकड़ा बन जाते हैं, जिन्हें भविष्य में कोट किया जाता है।

लेकिन सवाल वही कि इसका जिम्मेदार कौन?

सबसे पहले बेंगलुरु स्टैम्पेड की बात करें तो 3 जून को आईपीएल फाइनल मैच हुआ, जिसमें 17 साल बाद रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को जीत मिली। जीत का जश्न मनाने के लिए अगले दिन बेंगलुरु में विक्ट्री परेड की

घोषणा की गई। कार्यक्रम की योजना विधान सौधा से शुरू होकर एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम पर समाप्त होने की थी, जो लगभग 2 किलोमीटर की दूरी है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, चिन्नास्वामी स्टेडियम की क्षमता लगभग 35,000 थी, लेकिन लाखों लोग वहां इकट्ठा हो गए। करीब दो बजे के आसपास लोग स्टेडियम के पास जुटने लगे। तीन बजे तक भारी भीड़ जमा हो गई। साढ़े तीन से साढ़े चार के बीच भीड़ इतनी अधिक बढ़ गई कि भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में अब तक 11 लोगों की मौत हो चुकी है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, पुलिस का कहना है कि लाखों की भीड़ इकट्ठा हो गई थी, जिससे भगदड़ की स्थिति पैदा हुई। सबने अपने-अपने हिस्से की बात कह दी, लेकिन उनका क्या जिन्होंने अपनों को खो दिया?

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। इसी साल 29 जनवरी को महाकुंभ के दौरान संगम क्षेत्र में मौनी अमावस्या के दिन भगदड़ मची, जिसमें 30 लोगों की मौत हो गई और 60 से ज्यादा घायल हुए। इस हादसे के बाद भी प्रशासन के इंतजामों पर सवाल उठे, लेकिन जिम्मेदार कौन—इसकी फाइनल रिपोर्ट अभी तक सामने नहीं आई। इसके बाद 15 फरवरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 14 और 15 पर भगदड़ मची, जिसमें 18 लोगों की जान चली गई और 15 लोग घायल हो गए। इनमें से ज़्यादातर प्रयागराज से लौटे तीर्थ यात्री थे। इस मामले में भी जांच कमेटी बनी, और मार्च में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि जांच अभी चल रही है।

साल 2024 में हाथरस में एक सेल्फ-प्रोक्लेम्ड बाबा के सत्संग में भगदड़ मची, जिसमें 121 लोगों की जान चली गई। इस मामले में बाबा कई घंटे तक फरार रहा। 6 महीने बाद आई रिपोर्ट में उसे क्लीन चिट दे दी गई।तो हर बार बस यही कहा जाता है कि भीड़ बेकाबू हो गई। लेकिन सवाल यह है कि भीड़ बेकाबू कैसे हो जाती है? और अगर होती है, तो क्या इसका अनुमान पहले से नहीं लगाया जा सकता?

इन सबके बीच आम लोगों के लिए भी कुछ सवाल हैं। क्या आपके लिए आपकी जान से ज्यादा प्यारा कोई बाबा या कोई इवेंट हो सकता है? जब आपने देखा है कि अतीत में ऐसे आयोजनों में हादसे हुए हैं, तो क्यों आप ऐसे इवेंट में जाते हैं? अगर आप खुद अपनी जान की कीमत नहीं समझेंगे, तो और लोग कितनी समझेंगे,यह तो ऐसे हादसों से साफ़ दिखता है।

हाथरस स्टैम्पेड के बाद मैं खुद वहां गई थी और वहां मौजूद लोगों से पूछा कि क्या वे भविष्य में ऐसे सत्संगों में जाएंगे। उनका जवाब था "हम फिर जाएंगे।"

तो आम जनता को भी यह समझना होगा कि भीड़भाड़ वाले इवेंट्स में जान का खतरा है। हमें खुद अपनी सुरक्षा का ख्याल रखना होगा, क्योंकि बाक़ी लोग तो आपने देख ही लिया कि कैसे काम कर रहे हैं।

‘मैं भागा नहीं, सताया गया’ माल्या के इंटरव्यू ने मचाया तूफान

@ आनंद मीणा

आरसीबी 18 साल के लंबे इंतजार के बाद आईपीएल जीती है और विराट कोहली के लिए पूरा देश खुश हुआ। विजय माल्या ने भी अपनी खुशी जाहिर की। सोशल मीडिया पर उन्होंने आरसीबी को बधाई दी है। एक जमाने में विजय माल्या इस टीम के ओनर हुआ करते थे। लेकिन हाल ही में एक पॉडकास्ट में बात करते हुए उन्होंने अपने ऊपर लगे कई आरोपों पर सफाई दी है।

माल्या को अक्सर भगोड़ा कहा जाता है। जिसे देश के बैंकों से पैसा लूटकर भागा हुआ बताया जाता है। ऐसे कई सवालों के जवाब उन्होंने इस इंटरव्यू में दिए हैं।

विजय माल्या एक बार फिर चर्चा में हैं। इस बार वजह है उनका इंटरव्यू, जिसमें उन्होंने किंगफिशर एयरलाइंस के डूबने की असली वजहों पर भी बात की है। राज चानी से बातचीत के दौरान विजय माल्या ने यह खुलासा किया है कि उन्होंने भारत सरकार से एयरलाइंस को बचाने के लिए मदद मांगी थी, लेकिन उनकी बात नहीं मानी गई।अब इसे आसान भाषा में समझते हैं कि विजय माल्या ने क्या कुछ कहा है और किंगफिशर एयरलाइंस के साथ आखिर हुआ क्या था।

किंगफिशर एयरलाइंस की शुरुआत साल 2003 में हुई थी। यह एयरलाइन अपने प्रीमियम सर्विस के लिए जानी जाती थी। खूबसूरत यूनिफॉर्म्स, शानदार खाना और बेहतरीन कस्टमर सर्विस इसे लग्जरी फ्लाइंग का प्रतीक बनाते थे। लेकिन यह चमक थोड़े ही वक्त की थी।

कुछ सालों में ही एयरलाइन पर कर्ज काफी बढ़ गया और 2012 तक यह एयरलाइन बंद हो गई। विजय माल्या का कहना है कि किंगफिशर एयरलाइंस तब तक ठीक चल रही थी जब तक 2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी नहीं आई थी। उनके अनुसार, उस समय बाजार में पैसों की किल्लत हो गई थी, लोग खर्च नहीं कर रहे थे और इन्वेस्टर्स पीछे हट गए थे।भारतीय रुपये की वैल्यू गिरने लगी थी, जिससे एयरलाइन का इंटरनेशनल खर्च बढ़ गया। महंगा फ्यूल, कम कस्टमर और घटता हुआ सपोर्ट—इन सबने एयरलाइन को धीरे-धीरे नीचे गिरा दिया।

विजय माल्या ने बताया कि उन्होंने उस समय के वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी से मिलने का फैसला किया। उन्होंने सरकार से परमिशन मांगी कि एयरलाइन को डाउनसाइज़ किया जाए ,यानि एयरक्राफ्ट कम किए जाएं, कुछ कर्मचारियों को हटाया जाए—ताकि नुकसान कम हो सके। लेकिन माल्या के अनुसार, वित्त मंत्रालय ने उनके इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि एयरलाइन को चलता रहने दो, बैंक तुम्हें सपोर्ट करेंगे।

इस फैसले के बाद उन्होंने एयरलाइन को चलाने की कोशिश जारी रखी, लेकिन नुकसान और कर्ज बढ़ता गया और अंततः एयरलाइन बंद हो गई।विजय माल्या ने इस बातचीत में यह भी कहा कि उन्होंने बैंकों से कई बार सेटलमेंट की कोशिश की। उनके अनुसार, उन्होंने चार बार बैंकों को पैसा लौटाने का प्रस्ताव दिया, लेकिन हर बार वह रिजेक्ट कर दिया गया। उनका दावा है कि उन्होंने हमेशा पैसा लौटाने की कोशिश की, लेकिन बैंकों ने कभी सहयोग नहीं किया।

माल्या ने यह भी कहा कि उन्हें “पब्लिक में चोर” क्यों कहा जाता है, जबकि उन्होंने बैंक से जितना पैसा लिया, उससे ज्यादा चुका चुके हैं। उन्होंने बताया कि मीडिया में 9000 करोड़ रुपये के कर्ज की बात गलत है। डेबीट रिकवरी ट्रिब्यूनल के सर्टिफिकेट के अनुसार असली बकाया 6203 करोड़ रुपये था। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने 15 बार रिटर्न स्टेटमेंट ऑफ अकाउंट मांगा था, लेकिन किसी बैंक ने उन्हें क्लियर जवाब नहीं दिया। माल्या के अनुसार, उन्हें अपने लोन का पूरा अमाउंट संसद में वित्त मंत्रालय द्वारा दिए गए बयान से ही पता चला। इससे पहले किसी बैंक ने उन्हें आधिकारिक रूप से नहीं बताया कि कितना पैसा बकाया है।

विजय माल्या ने कहा कि वे आज भी भारत में ट्रायल फेस करने के लिए तैयार हैं, लेकिन एक शर्त पर—उन्हें भगोड़ा या चोर न कहा जाए। उनका कहना है कि वे निष्पक्ष ट्रायल के लिए तैयार हैं।विजय माल्या के इस नए बयान से एक नई बहस शुरू हो गई है। कुछ लोग कह रहे हैं कि सरकार ने समय रहते कदम नहीं उठाए, तो कुछ का मानना है कि माल्या को पहले ही सही तरीके से एयरलाइन को मैनेज करना चाहिए था।

किंगफिशर एयरलाइन की कहानी एक ऐसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट की है जो बड़े सपनों के साथ शुरू हुई थी, लेकिन खराब आर्थिक स्थितियों और वित्तीय कुप्रबंधन की वजह से डूब गई। विजय माल्या के ताजा खुलासे इस ओर इशारा करते हैं कि शायद अगर सरकार ने उस समय मदद की होती, तो कहानी कुछ और होती।उन्होंने इस बातचीत में मीडिया ट्रायल पर भी सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि वे भगोड़े नहीं हैं। वे भारत वापसी को भी तैयार हैं। लेकिन यह सब विजय माल्या के दावे हैं, जो इस बातचीत से सामने आए हैं।

माल्या किंगफिशर एयरलाइंस से जुड़ी वित्तीय अनियमितताओं के आरोपों के बीच 2016 में भारत से यूके भाग गए थे। 5 जनवरी 2019 को उन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया गया था। माल्या पर धोखाधड़ी और मनी लॉन्ड्रिंग के मामले चल रहे हैं। भारत सरकार उन्हें प्रत्यर्पित करने की कोशिश कर रही है।अब यह देखना बाकी है कि विजय माल्या के इन बयानों का असर कानूनी और राजनीतिक स्तर पर क्या होता है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

क्या टूटेगा आरक्षण का संतुलन?

@ आदेश प्रधान एडवोकेट

भारत जैसे बहुस्तरीय, बहुभाषी और बहुजातीय देश में "जाति" कोई साधारण सामाजिक पहचान नहीं, बल्कि सत्ता, संसाधन और सम्मान की त्रयी का प्रतिनिधित्व करती है। यद्यपि भारतीय संविधान ने समानता का वादा किया था, लेकिन यथार्थ यह है कि आज भी जाति हमारी राजनीति, प्रशासन, न्याय और नीतियों का अदृश्य ढांचा बनी हुई है। ऐसे में जातिगत जनगणना — जो 1931 के बाद ठहर सी गई थी — एक बार फिर केंद्रबिंदु बन गई है।

अब प्रश्न यह है कि क्या जातिगत जनगणना से सामाजिक न्याय की वास्तविक स्थापना हो सकेगी, या यह एक और राजनीतिक चक्रव्यूह होगा, जिसमें वोट और

जाति का समीकरण उलझ जाएगा?

जातिगत जनगणना की पृष्ठभूमि

भारतीय जनगणना का इतिहास 1872 से शुरू होता है, लेकिन 1931 की जनगणना वह आखिरी मौका था जब सभी जातियों का आंकड़ा सार्वजनिक रूप से दर्ज किया गया। 1951 से लेकर अब तक केवल अनुसूचित जातियों (SC) और जनजातियों (ST) की गणना होती रही है। अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) की संख्या पर कोई अधिकारिक आंकड़ा केंद्र सरकार के पास नहीं है, जबकि देश की नीतियों का एक बड़ा हिस्सा इसी वर्ग के नाम पर तैयार होता रहा है।

मंडल आयोग (1980) ने OBC की संख्या 52% बताई थी, लेकिन यह आंकड़ा एक नमूना सर्वेक्षण पर आधारित था, न कि जनगणना पर। इससे सरकारों को OBC आरक्षण का नैतिक आधार तो मिला, लेकिन संख्यात्मक प्रमाण नहीं।

जनगणना की अनुपस्थिति: असमानता की गूंगी तस्वीर

जातिगत आंकड़ों की अनुपस्थिति ने भारतीय लोकतंत्र में एक बड़ा खालीपन छोड़ दिया है। आप एक ऐसी गाड़ी चला रहे हैं, जिसका नक्शा आपके पास ही नहीं है। केंद्र सरकार, जो तमाम योजनाओं को जाति-आधारित आरक्षण, स्कॉलरशिप, कोटा और प्रतिनिधित्व के नाम पर लागू करती है, उसी के पास यह आंकड़ा नहीं है कि जिस वर्ग के लिए योजना बनी है, वह वाकई कितनी जनसंख्या रखता है? क्या यह न्याय है या सुविधा से किया गया अंधापन?

राज्य सरकारों की पहल: एक असंतुलित सामंजस्य

जब केंद्र ने कदम पीछे खींचे, तब कुछ राज्य आगे आए

बिहार

बिहार सरकार ने 2022–23 में जातिगत सर्वेक्षण कर 215 जातियों की सूची प्रकाशित की। रिपोर्ट के अनुसार:

EBC 36%, OBC 27% ,SC/ST,लगभग 20%, सवर्ण महज 15% यह आंकड़ा राजनीतिक भूचाल बन गया। जातिगत जनसंख्या में EBC और OBC का कुल प्रतिशत 63% बताता है, जबकि उन्हें राज्य में आरक्षण 27% तक सीमित है। यह असमानता "जातीय न्याय" की मांग को उग्र बना रही है।

राजस्थान, ओडिशा और तेलंगाना

राजस्थान ने 'सामाजिक न्याय अध्ययन' की बात की, जबकि तेलंगाना ने पहले से ही SECC (2011) के आंकड़ों को नकारा बताया। ओडिशा ने भी OBC सर्वे शुरू किया।

केंद्र सरकार का रुख: उलझा हुआ तर्क

केंद्र सरकार का कहना है कि जातिगत जनगणना "जटिल, भ्रम पैदा करने वाली और असामाजिक प्रभाव" ला सकती है। 2011 की SECC के अनुभवों को आधार बनाकर उन्होंने कहा कि 46 लाख से अधिक जातियों का अनावश्यक डेटा आया। आंकड़े बेमेल और अव्यवस्थित थे। किसी नीति निर्णय का आधार नहीं बन सके।लेकिन यह तर्क विरोधाभासी है। जब धर्म, भाषा, आर्थिक स्थिति और यहां तक कि टॉयलेट की संख्या तक का डेटा इकठ्ठा किया जा सकता है, तो जाति को छोड़ देना केवल राजनीतिक भय का प्रमाण प्रतीत होता है ।

जाति, राजनीति और वोट: असली मकसद क्या है?

भारतीय लोकतंत्र में जाति केवल सामाजिक ढांचे का हिस्सा नहीं, बल्कि चुनाव की रीढ़ है। हर दल उम्मीदवार तय करते समय जाति-समूह का हिसाब करता है। चुनावों में जातिगत समीकरण, गठबंधन और "बिरादरी सम्मेलन" जैसे शब्द आम हो चुके हैं। तो फिर जातिगत जनगणना से परहेज़ क्यों? क्योंकि सटीक आंकड़े आने के बाद OBC की संख्या 50% से अधिक साबित हो सकती है। वर्तमान आरक्षण सीमा (50%) पर पुनर्विचार की मांग बढ़ेगी। सवर्ण वोटबैंक पर असर पड़ेगा जो सत्ता में बैठी ताकतों के लिए अहम है।

सुप्रीम कोर्ट और 50% सीमा की बहस

इंदिरा साहनी केस (1992) में सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण की अधिकतम सीमा 50% तय की थी। यह एक "सावधानी भरी संतुलन रेखा" मानी गई। लेकिन यदि OBC की वास्तविक जनसंख्या 52% या उससे अधिक निकले, तो क्या यह सीमा न्यायपूर्ण रहेगी?

जातिगत जनगणना इस बहस को न केवल पुनर्जीवित करेगी, बल्कि न्यायपालिका, विधायिका और नीति निर्माताओं को नई चुनौती भी देगी।

सामाजिक न्याय बनाम सामाजिक विभाजन

जातिगत जनगणना की आलोचना करने वालों का कहना है कि इससे जातियों की पहचान और गहराएगी। "हम-वे" की मानसिकता बढ़ेगी। सामाजिक सौहार्द को क्षति पहुंचेगीलेकिन इन तर्कों में एक भय की राजनीति छुपी है। क्या जातिगत विषमता को इसलिए अनदेखा किया जाए क्योंकि उसका समाधान कठिन है?

सच्चा सामाजिक सौहार्द तभी संभव है जब असमानता को आंकड़ों से पहचाना जाए और उसे नीति द्वारा पाटा जाए।

राजनीतिक लाभ: कौन होगा सबसे बड़ा विजेता?

अब बात करते हैं उस विषय की, जो हर नागरिक के मन में गूंज रहा है इस जातिगत जनगणना से किस राजनीतिक दल को सबसे अधिक लाभ मिलेगा?

भारतीय जनता पार्टी (BJP)

BJP की राजनीति लंबे समय तक हिंदू एकता और सवर्ण नेतृत्व पर टिकी रही है। हालांकि, 2014 के बाद पार्टी ने पिछड़े वर्गों को साधने के लिए OBC आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया। कई पिछड़े नेताओं को मुख्यमंत्री बनाया। जातिगत प्रतीकों को अपनाने की कोशिश की। लेकिन यदि OBC की जनसंख्या 60% के आसपास आती है, तो आरक्षण की मांग तेज होगी — और BJP को सवर्ण असंतोष का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही, RSS की दीर्घकालिक जाति-विरोधी विचारधारा से भी यह कदम टकरा सकता है।

कांग्रेस

कांग्रेस ने जातिगत जनगणना का समर्थन किया है और "जितनी आबादी, उतना हक" का नारा दिया है। यह नारा मंडल युग की वापसी का संकेत है, जहाँ कांग्रेस खुद को SC/ST/OBC वर्गों के वास्तविक प्रतिनिधि के रूप में पेश कर सकती है। Bihar सर्वेक्षण के बाद राहुल गांधी की भाषा और रणनीति स्पष्ट रूप से जातीय न्याय के समर्थन में दिखी है।

क्षेत्रीय दल -असली लाभार्थी

जातिगत जनगणना से सबसे बड़ा फायदा उन दलों को मिलेगा जिनकी राजनीति ही जाति-आधारित प्रतिनिधित्व पर टिकी है:

राजद (बिहार) – मंडल राजनीति के प्रतीक

सपा (उत्तर प्रदेश) – यादव, मुस्लिम और पिछड़े वर्गों का प्रतिनिधित्व

JDU, DMK, RLD, BJD – सभी OBC हितों को प्राथमिकता देते हैं

ये दल इस जनगणना के आधार पर केंद्र से आरक्षण वृद्धि, प्रतिनिधित्व, सरकारी योजनाओं में बदलाव और सामाजिक अनुपात की मांग करेंगे। संक्षेप में कहें तो, जातिगत जनगणना अगर खुलकर सामने आती है, तो राष्ट्रीय राजनीति का केंद्र OBC बन जाएगा, और इससे सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस और क्षेत्रीय पार्टियों को मिलेगा।

क्या यह लोकतंत्र की गहराई है?

जातिगत जनगणना सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि भारतीय गणराज्य के आत्म-निरीक्षण का अवसर है। यह तय करेगा कि हम सचमुच एक समानता आधारित समाज बनाना चाहते हैं या वोट बैंक आधारित गणराज्य। इसलिए अब समय है कि इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार हो।आंकड़े राजनीति के हाथों की कठपुतली न बनें। न्याय, समावेश और सम्मान के आधार पर नीतियाँ तैयार हों। जातिगत जनगणना एक अवसर है — यदि इसे साहस और संवेदना से पूरा किया जाए। वरना यह महज सत्ता की जाति-पहेली बनकर रह जाएगी। कांग्रेस और क्षेत्रीय दल सबसे बड़े लाभार्थी बन सकते हैं।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 09 जून 2025 , विक्रम संवत 2080

राहुल गांधी की नई मुश्किलें

पिछले छह महीनों में भारत में एक स्पष्ट राजनीतिक बदलाव देखा गया है।इससे पहले भारत में साम्यवादी विचारधारा, कट्टरपंथी मुसलमानों और नेहरू परिवार के बीच एक मज़बूत गठबंधन दिखाई देता था। राहुल गांधी को पूरा विश्वास था कि यह गठजोड़ समय के साथ और अधिक ताकतवर होता जाएगा।

लेकिन बीते छह महीनों में जिस तरह नक्सलवादी मारे जा रहे हैं, और रोहिंग्या, बांग्लादेशी व पाकिस्तान समर्थित कट्टरपंथी मुसलमानों को देश से निकाला जा रहा है, उससे यह गठबंधन कमजोर होता दिखाई दे रहा है। जैसे-जैसे इन दोनों वर्गों का प्रभाव और जनसंख्या कम होती जा रही है, राहुल गांधी को यह अहसास हो रहा है कि उनके राजनीतिक आधार की ज़मीन धीरे-धीरे खिसक रही है।यदि उनके ये "महत्वपूर्ण मतदाता वर्ग" ही समाप्त हो गए, तो समाज भयभीत किससे होगा? और लोग डर के मारे नेहरू परिवार को वोट क्यों देंगे? यही चिंता आज उन्हें सताने लगी है।फिर भी राहुल गांधी अब तक परिस्थितियों को धैर्यपूर्वक देख रहे थे, यह उम्मीद करते हुए कि शायद हालात बदल जाएं।लेकिन बीते कुछ दिनों में छत्तीसगढ़ में कई बड़े नक्सलियों के मारे जाने के बाद उनके धैर्य का बाँध टूट गया लगता है।आज कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता (जो एक प्रदेश अध्यक्ष भी हैं) ने घबराहट में बयान दिया कि:"नक्सली हमारे देश के नागरिक हैं। वे न्याय के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उनके साथ शांतिपूर्वक वार्ता होनी चाहिए। उनका मारा जाना पूर्ण रूप से अन्याय है। सरकार को तुरंत यह हत्याकांड रोकना चाहिए और उनसे वार्ता करनी चाहिए। नक्सलियों के साथ बल प्रयोग नहीं होना चाहिए।"

यह बयान किसी आम व्यक्ति का नहीं, बल्कि कांग्रेस के एक उच्च पदस्थ नेता का है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राहुल गांधी नक्सलियों के मारे जाने से गहराई से चिंतित हैं।भविष्य उनके लिए बहुत चुनौतीपूर्ण दिखाई दे रहा है।यह भी संभव है कि यदि नक्सलियों के सफाए का सिलसिला ऐसे ही चलता रहा, तो निकट भविष्य में नक्सल समर्थक नेताओं के खिलाफ भी कार्रवाई हो, और उनका जेल जाना तय हो जाए।

बजरंग मुनि
(विचारक)

तकनीक, ताकत और तिरंगे का संगम है चिनाब ब्रिज

@ अनुराग पाठक

भारत के लिए 6 जून 2025 की तारीख केवल एक पुल के उद्घाटन की नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक संकल्प की पूर्ति की है। चिनाब नदी पर बना यह पुल, जो आज दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज है, भारत की तकनीकी क्षमता, सामरिक दृष्टिकोण और राजनीतिक इच्छाशक्ति का ऐसा मेल है, जिसकी कल्पना वर्षों पहले की गई थी, लेकिन साकार अब होकर सामने आया है। यह वह संरचना है, जो पेरिस के एफिल टावर से भी ऊंची है, जो आठ तीव्रता तक के भूकंप को झेल सकती है और जिस पर विस्फोटक से हमला भी बेअसर रहेगा। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि यह पुल आज भारत के एक लंबे प्रतीक्षित सपने को धरातल पर उतारता है, कश्मीर को हर मौसम में भारत के शेष भागों से जोड़ना।

यह पुल एक इंजीनियरिंग चमत्कार है, लेकिन उसकी नींव में इतिहास के कई अधूरे प्रयास और राजनीतिक अनिर्णय भी छिपे हैं। अंग्रेजों के दौर से लेकर आज़ादी के वर्षों बाद तक, कश्मीर तक रेल पहुँचाने के प्रयास हुए, लेकिन वे या तो अधूरे रह गए या सीमित सफलता में सिमट गए। जब इंदिरा गांधी ने रेल विस्तार की दिशा में सोच विकसित की, तो भी समय और संसाधनों की सीमाओं ने इसे लंबा खींच दिया। 1994 में USBRL परियोजना की शुरुआत ने इस दिशा में ठोस पहल की, लेकिन असली संकल्प तब दिखा जब इसे केंद्र सरकार के सीधे अधीन कर दिया गया और प्रधानमंत्री स्तर से इसकी निगरानी शुरू हुई।

इस पुल की सामरिक महत्ता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अखनूर जैसा संवेदनशील क्षेत्र, जो कश्मीर का 'चिकन नेक' कहा जाता है, अब भारत के लिए सामरिक रूप से अधिक सुरक्षित हो गया है। यह पुल केवल रेल का मार्ग नहीं है, यह सेना की तेज आवाजाही, त्वरित रसद आपूर्ति और सीमावर्ती इलाकों में भारत की उपस्थिति को मजबूत करने वाला संरचनात्मक हथियार है। भारत अब उस स्थिति में है जहां वह युद्ध जैसी किसी भी परिस्थिति में तेजी से प्रतिक्रिया दे सकता है, और यही बात पाकिस्तान और चीन की चिंता का कारण है।

इस पुल का एक और महत्वपूर्ण प्रभाव घाटी के लोगों के जीवन पर पड़ेगा। कश्मीर वर्षों तक एक अलग-थलग, सीमित पहुंच वाला क्षेत्र बना रहा, जहाँ बर्फबारी और भौगोलिक कठिनाइयाँ न केवल संपर्क तोड़ देती थीं, बल्कि अलगाव की भावना को भी बल देती थीं। अब जब हर मौसम में आवागमन संभव होगा, तो कश्मीर की भौगोलिक दूरियाँ भी भावनात्मक रूप से कम होंगी। आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो कृषि, पर्यटन और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्र नई संभावनाओं से भर जाएंगे। स्थानीय रोजगार, व्यापार और अवसरों में इजाफा होगा और घाटी का युवा भारत के विकास में भागीदार बन सकेगा।

यह ब्रिज केवल एक निर्माण परियोजना नहीं है, यह राष्ट्रीय आत्मबल का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि जब राजनीतिक इच्छाशक्ति, तकनीकी दक्षता और रणनीतिक सोच एक दिशा में एकत्र होती है, तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। चिनाब ब्रिज इस सदी का ऐसा कीर्तिस्तंभ बन चुका है, जो आने वाली पीढ़ियों को यह विश्वास देगा कि भारत न केवल योजनाएं बनाता है, बल्कि उन्हें यथार्थ में बदलने की ताकत भी रखता है।

भारत के लिए यह पुल केवल एक साधन नहीं, बल्कि संप्रभुता, सुरक्षा और समरसता का नया मार्ग है। कश्मीर अब न केवल भारत के नक्शे में है, बल्कि उसकी रगों से जुड़ चुका है,इस्पात और संकल्प की इन मजबूत रेखाओं से।

जुबानी तीर

"सिद्दरमैया और शिवकुमार के बीच आपसी लड़ाई और मनमुटाव के कारण राज्य में भगदड़ मची। इस भगदड़ के लिए कांग्रेस सरकार जिम्मेदार है।

संबित पात्रा
(भाजपा प्रवक्ता)

"उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को तत्काल इस्तीफा दे देना चाहिए। भगदड़ की जांच के लिए हाई कोर्ट के वर्तमान न्यायाधीश के नेतृत्व में जांच समिति गठित होनी चाहिए। बिना किसी योजना या विचार के जल्दबाजी में काम करने से यही होगा।

शोभा करंदलाजे
(केंद्रीय मंत्री)

"11 लोगों की जान लेने वाली इस घटना के कारण बेंगलुरु की छवि खराब हुई है। हमें बहुत दुख हुआ है। पीड़ित हमारे अपने परिवार के लोग हैं। कर्नाटक की छवि, बेंगलुरु की छवि..हां हम इसकी (जिम्मेदारी) लेते हैं। हम दूसरों को दोष नहीं दे रहे हैं। हालांकि यह बहुत अप्रत्याशित रूप से हुआ है। किसी को भी इतनी भीड़ की उम्मीद नहीं थी। हम मृतक का सम्मान करना चाहते हैं। मेरे सीएम भी सदमे में हैं, मेरे गृह मंत्री भी सदमे में हैं और पूरा राज्य सदमे में है। राज्य इस पर शोक मना रहा है।

डीके शिवकुमार (उप मुख्यमंत्री, कर्नाटक)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित ।
संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252; संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

गर्मी में त्वचा की सुरक्षा
आयुर्वेदिक सीक्रेट्स जो हर कोई जानना चाहे

@ डॉ. महिमा मक्कर

गर्मियों का मौसम अपने साथ चिलचिलाती धूप, पसीना और उमस लेकर आता है। इस दौरान सबसे ज्यादा असर हमारी त्वचा पर पड़ता है। पसीने और गर्मी के कारण त्वचा में जलन, खुजली, फुंसियां, दाने और फंगल इंफेक्शन जैसी समस्याएं आम हो जाती हैं। बाजार में मिलने वाले केमिकल युक्त क्रीम्स और लोशन से कुछ समय के लिए आराम तो मिलता है, लेकिन ये समस्याएं बार-बार लौट आती हैं।

आयुर्वेद, जो कि हजारों साल पुरानी भारतीय चिकित्सा पद्धति है, इस समस्या का स्थायी समाधान प्राकृतिक तरीके से देता है। इस लेख में हम आपको बताएंगे कि कैसे आप गर्मी में त्वचा को संक्रमण से बचाने के लिए आयुर्वेदिक उपायों को अपनाकर साफ़, स्वस्थ और चमकदार त्वचा पा सकते हैं।

गर्मी में त्वचा के संक्रमण क्यों होते हैं ?

गर्मी के मौसम में शरीर से अधिक पसीना निकलता है। जब यह पसीना शरीर पर जमा हो जाता है और साफ-सफाई सही तरीके से नहीं होती, तो बैक्टीरिया और फंगस पनपने लगते हैं। इसके कारण कई प्रकार की त्वचा संबंधी समस्याएं हो सकती हैं, जैसेःदाद, खुजली, चकत्ते,हीट रैश (घमौरियां),फंगल इंफेक्शन (जैसे कि टीनिया, रिंगवर्म),बैक्टीरियल इंफेक्शन,स्किन एलर्जी या रिएक्शन। इन समस्याओं से बचने के लिए आयुर्वेद न केवल इलाज करता है, बल्कि शरीर की प्रकृति (वात, पित्त, कफ) के अनुसार संतुलन बना कर रोग की जड़ से नाश करता है।

आयुर्वेद में त्वचा को लेकर क्या कहा गया है ?

आयुर्वेद में त्वचा को "त्वचा धातु" कहा गया है और इसे सात धातुओं में से एक माना गया है। हमारे शरीर की त्वचा अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी तत्वों से बनी होती है। गर्मियों में "पित्त दोष" सबसे ज्यादा बढ़ता है, जिससे त्वचा की गर्मी भी बढ़ जाती है। जब पित्त असंतुलित होता है, तो त्वचा पर जलन, खुजली, रैश और फोड़े-फुंसी जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

गर्मी में त्वचा को संक्रमण से बचाने के आयुर्वेदिक उपाय

नीम का प्रयोग – प्राकृतिक एंटीसेप्टिक

नीम को आयुर्वेद में "त्वचा रोग नाशक" कहा गया है। इसमें एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीसेप्टिक गुण होते हैं।

कैसे इस्तेमाल करें:

रोज़ सुबह खाली पेट 4-5 नीम की पत्तियां चबाएं।

नीम के पत्तों को पानी में उबालें और उस पानी से नहाएं।

नीम पाउडर को गुलाब जल में मिलाकर पेस्ट बनाएं और संक्रमित जगह पर लगाएं।

त्रिफला – आंतरिक शुद्धि का उत्तम उपाय

त्रिफला एक शक्तिशाली आयुर्वेदिक मिश्रण है जिसमें आंवला, हरड़ और बहेड़ा होता है। यह शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालता है।

कैसे इस्तेमाल करें:

रात को एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को गर्म पानी के साथ लें।

यह पाचन तंत्र को सुधारता है और त्वचा की गंदगी को अंदर से साफ करता है।

चंदन और कपूर – ठंडक और त्वचा सुरक्षा

चंदन त्वचा को ठंडक देता है और खुजली या जलन को कम करता है। कपूर में फंगल इंफेक्शन से लड़ने की ताकत होती है।

कैसे इस्तेमाल करें

1 चम्मच चंदन पाउडर + चुटकी भर कपूर + गुलाब जल मिलाकर पेस्ट बनाएं।

इसे घमौरियों, खुजली या दाद पर लगाएं।

एलोवेरा – त्वचा का मित्र

एलोवेरा में शीतलता और नमी देने वाले तत्व होते हैं, जो गर्मी के मौसम में त्वचा को संक्रमण से बचाते हैं।

कैसे इस्तेमाल करें:

ताजे एलोवेरा जेल को सीधा त्वचा पर लगाएं। या फिर सुबह खाली पेट एलोवेरा जूस पिएं।

मुल्तानी मिट्टी – त्वचा की गर्मी दूर करे

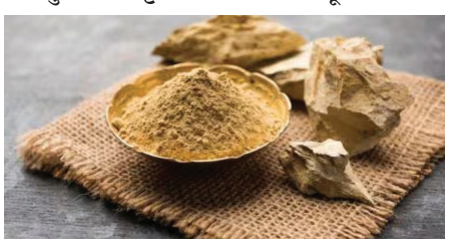

मुल्तानी मिट्टी त्वचा से अतिरिक्त तेल और गर्मी को सोख लेती है, जिससे रैशेज और दाने नहीं होते।

कैसे इस्तेमाल करें:

मुल्तानी मिट्टी + गुलाब जल + एक चुटकी हल्दी मिलाकर पेस्ट बनाएं।

इसे शरीर के गर्म हिस्सों (जैसे पीठ, गर्दन, जांघों) पर लगाएं और सूखने पर धो लें।

हल्दी – प्राकृतिक एंटीबायोटिक

हल्दी में करक्यूमिन नामक तत्व होता है जो सूजन और इन्फेक्शन से लड़ता है।

कैसे इस्तेमाल करें:

हल्दी वाला दूध रोज रात को पिएं। हल्दी पाउडर और नारियल तेल मिलाकर पेस्ट बनाएं और खुजली वाली जगह पर लगाएं।

खानपान में आयुर्वेदिक बदलाव

गर्मी में ऐसा आहार लें जो पित्त दोष को शांत करे और त्वचा को अंदर से ठंडक दे।

क्या खाएं: ठंडी चीज़ेंः खीरा, तरबूज, खरबूजा, नारियल पानी, बेल शरबत,ग्रीन टी या नींबू पानी,चावल, मूंग दाल, पतली खिचड़ी,तुलसी और पुदीना की पत्तियां

क्या न खाएं: बहुत मिर्च-मसालेदार खाना,ज्यादा तली-भुनी चीजें,बासी या पैकेज्ड खाना,गैस और अम्ल बढ़ाने वाले आहार (जैसे बेसन, उड़द दाल)

नहाने के आयुर्वेदिक उपाय

नीम-पानी स्नानः सप्ताह में 2-3 बार नीम के पत्तों को उबालकर उस पानी से स्नान करें।

गुलाब जल और चंदन मिलाकर स्नानः यह त्वचा को ठंडक देता है और पसीने की बदबू से बचाता है।

बेसन और हल्दी से उबटनः नहाने से पहले बेसन + हल्दी + दूध का लेप लगाएं, यह त्वचा को संक्रमण से बचाता है।

जीवनशैली में बदलाव

शरीर को सूखा रखें: पसीने के बाद तुरन्त साफ कपड़े पहनें और शरीर को सुखाएं।

ढीले, सूती कपड़े पहनें: जिससे हवा आसानी से भीतर जा सके।

शरीर को बार-बार पानी से धोएं: खासकर उन हिस्सों को जहां पसीना ज्यादा आता है (जैसे बगल, कमर, पैर के तलवे)।

योग और प्राणायाम करें: जैसे चंद्र भेदी प्राणायाम और शीतली प्राणायाम – यह शरीर को ठंडा रखते हैं।

आयुर्वेदिक तेल और क्रीम्स

नारियल तेल में कपूर मिलाकर लगाना – यह फंगल इंफेक्शन में अत्यंत लाभकारी है।

नीम तेल – दाद, खाज, खुजली के लिए सर्वोत्तम।

कुंकुमादी तेल – झाइयां, दाग-धब्बे और गर्मी से झुलसी त्वचा के लिए उपयोगी।

आयुर्वेद कोई तात्कालिक जादू नहीं करता

गर्मी में त्वचा संक्रमण एक आम समस्या है लेकिन यदि हम आयुर्वेद के बताए प्राकृतिक उपायों को अपनाएं तो इससे पूरी तरह बचा जा सकता है। नियमित पाठ्यचर्या, संतुलित आहार, प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल और शरीर की सफाई से त्वचा को स्वस्थ, सुंदर और संक्रमणमुक्त रखा जा सकता है। याद रखें, आयुर्वेद कोई तात्कालिक जादू नहीं करता, लेकिन यह स्थायी समाधान अवश्य देता है। संयम, नियमितता और श्रद्धा के साथ इन उपायों को अपनाएं और प्राकृतिक रूप से जीवन को सुंदर बनाएं।

संत सिंगाजी: निर्गुण भक्ति का दीपक

आध्यात्मिक क्रांति के प्रणेता

मध्य भारत की पावन भूमि पर, जहाँ सत्य और भक्ति की गंगा प्रवाहित होती थी, संत सिंगाजी का अवतरण एक दैवीय प्रकाश के समान हुआ। वे निर्गुण भक्ति परंपरा के शिखर पुरुष थे, जिन्हें मध्य भारत का कबीर कहा जा सकता है। उनकी आध्यात्मिक गहराई और तपस्या ने असंख्य जीवों को मुक्ति के पथ पर अग्रसर किया। संत सिंगाजी तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई और गुरु अर्जुन देव जैसे महान संतों के समकालीन थे। उनके युग में सगुण और निर्गुण भक्ति धाराओं का अद्भुत समन्वय हो रहा था, जो समाज को आध्यात्मिक चेतना से आलोकित कर रहा था। इस युग में सत्य की शक्ति लोकजीवन में एक शीतल क्रांति के रूप में अवतरित हो रही थी, और संत सिंगाजी इस आध्यात्मिक जागरण के प्रमुख सूत्रधार थे।

उनके समय में दिल्ली पर सम्राट अकबर का शासन था, और देश में धार्मिक सहिष्णुता व सामाजिक सौहार्द की लहर प्रवाहित हो रही थी। इस शांतिपूर्ण वातावरण में सिंगाजी की पवित्र वाणी ने लोगों को सांसारिक मोह-माया की नश्वरता का बोध कराया। उन्होंने सिखाया कि संसार के सभी पदार्थ और संबंध क्षणभंगुर हैं; कोई भी अंत समय में साथ नहीं देता। इसलिए जीवन का परम कर्तव्य है कि जीवात्मा अनासक्त भाव से निरंतर परमात्मा का भजन करे। मालवा और निमाड़ की जनता पर उनकी वाणी का गहरा प्रभाव पड़ा। लोग श्रद्धा और भक्ति के साथ कहते हैं:

"सिंगा बड़ा अवलिया पीर, जिसको सुमिरे राव अमीर।"

(संत सिंगाजी महान संत हैं, जिनका स्मरण राजा और रंक दोनों करते हैं।)

निमाड़ के किसानों के हृदय में सिंगाजी के प्रति अटूट श्रद्धा है। संकट के समय वे कहते हैं:

"म्हारा सिर पर सिंगा जवरा गुरु, में सदा करत हूँ मुजरा।"

(मेरे सिर पर गुरु सिंगाजी विराजमान हैं, मैं सदा उन्हें प्रणाम करता हूँ।)

संत सिंगाजी को मध्यप्रदेश, विशेषकर निमाड़ और मालवा की जनता का आध्यात्मिक प्राणधन कहा जा सकता है।

दैवीय अवतरण

संत सिंगाजी का जन्म मध्य भारत के बड़वानी राज्य के खजूरी ग्राम में विक्रम संवत 1576 (1519 ई.) में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को हुआ। सुबह के लगभग आठ बजे, जब उनकी माता गौराबाई घर से कुछ दूरी पर कंडे थाप रही थीं, तब इस पवित्र आत्मा ने धरती पर अवतरण किया। उनके जन्म से गाँव में आनंद की लहर दौड़ गई। उनके पिता भीमा जी गौली ने पुत्र प्राप्ति के उपलक्ष्य में अनेक दान-पुण्य किए। माता-पिता ने बड़े प्रेम और भक्ति से उनका पालन-पोषण किया। सिंगाजी के बाल्यकाल के संस्कार अत्यंत दैवीय थे, मानो उनके हृदय में परमात्मा का प्रकाश जन्म से ही विराजमान था।

पाँच वर्ष की आयु में उनका परिवार खजूरी से हरसूद ग्राम में स्थानांतरित हो गया। वहाँ भीमा जी तीन सौ भैंसों के साथ सपरिवार रहने लगे। इस यादव परिवार की सादगी, परिश्रम और भक्ति ने शीघ्र ही आसपास के गाँवों में ख्याति अर्जित की। सिंगाजी स्वभाव से परिश्रमी और अध्यवसायी थे। यथासमय उनका विवाह हुआ, किंतु गृहस्थ जीवन में उनका मन नहीं रमा। घर की सुख-सुविधाएँ उनके लिए बंधन-सी प्रतीत होती थीं। उनकी आत्मा वैराग्य और अनासक्ति की ओर उन्मुख थी, जो उनके आध्यात्मिक पथ की आधारशिला बनी।

सांसारिक सेवा से आध्यात्मिक पथ की ओर

युवावस्था में सिंगाजी ने हरसूद के समीप भामगढ़ के रावत साहब की सेवा स्वीकारी। वे रावत साहब के लिए डाक पहुँचाने का कार्य करते थे। उनकी निष्ठा और विश्वसनीयता ऐसी थी कि रावत साहब अपने सबसे गुप्त कार्य भी उन्हें सौंपते थे। उनका वेतन केवल एक रुपया था, किंतु सिंगाजी संतोषी स्वभाव के थे। वे बड़ी सावधानी और निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे।

एक दिन उनके जीवन में एक अलौकिक घटना घटी, जिसने उनके हृदय को वैराग्य की ओर मोड़ दिया। रावत साहब की डाक लेकर घोड़े पर सवार होकर वे हरसूद से भामगढ़ की ओर जा रहे थे। घोड़ा तेजी से दौड़ रहा था, और सिंगाजी अल्हड़ता व मस्ती में डूबे थे। तभी भैसावा ग्राम में पहुँचते ही उन्होंने घोड़े की लगाम खींच ली। वहाँ महात्मा ब्रह्मगिरी के शिष्य संत मनरगीर जी भजन गा रहे थे। उनकी वाणी—"समुझि लेओ रे मना भाई, अंत न होइ कोई आपना।"—सिंगाजी के कानों में पड़ी और उनके हृदय को झंकृत कर गई। उनका शरीर रोमांचित हो उठा, और वे आत्मविभोर होकर घोड़े से उतर पड़े।

संसार की नश्वरता उनके नेत्रों के समक्ष नृत्य करने लगी। उन्हें बोध हुआ कि शरीर, परिवार और सांसारिक संबंध माया के पुतले हैं, जो अंत में साथ नहीं देते। वैराग्य की लहर ने उनके हृदय को अभिभूत कर लिया। वे संत मनरगीर के चरणों में गिर पड़े और बोले, "महाराज, मैं आपकी शरण में हूँ। मैं संसार में आसक्त था, किंतु अब मुझे आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई है। मुझे अपना शिष्य बनाइए, मेरा उद्धार कीजिए, मुझे मंत्र दीजिए।" संत मनरगीर ने उन्हें शिष्य के रूप में स्वीकार किया और मंत्र प्रदान किया।

वैराग्य और भक्ति का जीवन

मंत्र दीक्षा के पश्चात सिंगाजी भामगढ़ लौटे, किंतु उनका मन अब संसार से विरक्त हो चुका था। उन्होंने रावत साहब की नौकरी छोड़ दी, भले ही उनका वेतन एक रुपये से बढ़कर तीन रुपये हो गया था। रावत साहब ने उन्हें बहुत समझाया, किंतु सिंगाजी का वैराग्य अटल था। संत वाणी की अमृतमयी वारुणी पीकर वे संसार के चक्र से मुक्त हो चुके थे। उन्होंने सन्यास का मार्ग अपनाया और पीछे हटना उचित नहीं समझा।

हरसूद लौटकर सिंगाजी ने रामनाम की खेती आरंभ की। जीविका के लिए उन्होंने भैंस चराने का कार्य अपनाया। वे पीपल्या के जंगल में रहकर भैंसें चराते और साथ ही भक्ति भरे पदों की रचना करते। अपने तीन वर्ष के साधनामय जीवन में उन्होंने लगभग आठ सौ पदों की रचना की। बाद में वे पीपल्या का जंगल छोड़कर फीफराह नदी के तट पर फीफराड के जंगल में रहने लगे, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिन बिताए। इस वैराग्य काल में उन्होंने निर्गुण ब्रह्म की उपासना की और अपने पदों में ब्रह्मतत्व की अनुभूतिपूर्ण व्याख्या की। उन्होंने घोषणा की:

"जामें मुक्तो लाभ, खेती खेडो हरिनाम की।"

(जहाँ मुक्ति का लाभ हो, वहाँ हरिनाम की खेती करो।)

गुरु भक्ति और अंतिम यात्रा

संत मनरगीर की सिंगाजी पर अपार कृपा थी। एक बार, कृष्ण जन्माष्टमी की रात, मनरगीर ने उन्हें आदेश दिया कि आधी रात को भगवान के जन्म के समय उन्हें जगा दें। सिंगाजी भगवान के भजन में इतने मस्त हो गए कि आधी रात को वे स्वयं भगवान की स्तुति और पूजन में लीन हो गए। संत मनरगीर गहरी नींद में थे, और सिंगाजी ने सोचा कि गुरु को जगाना उनके प्रति अपराध होगा। उन्होंने स्वयं भगवान की आरती कर ली। जब मनरगीर जागे, तो उन्हें इस बात का गहरा दुख हुआ और आवेश में उन्होंने सिंगाजी को शाप दे दिया कि "आज से मुझे अपना मुख न दिखाना।" सिंगाजी चुपचाप चले गए और कभी गुरु के दर्शन हेतु नहीं लौटे। फिर भी, उनकी गुरु भक्ति में कोई कमी न आई।

संत सिंगाजी निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के महान संत थे। वे आजीवन अखंड ब्रह्म पूजा में लीन रहे। उन्होंने योगपुरुष निराकार की अखंड ज्योति का दर्शन किया और घट-घट में सनातन तत्व का साक्षात्कार किया। उनकी वाणी और भक्ति आज भी मालवा और निमाड़ की जनता के हृदय में अमर है, जो उन्हें सदा श्रद्धा और प्रेम से स्मरण करती है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

ड्यूटी या धर्म

सेना में एक मुश्किल जंग

भारतीय सेना में एक नौजवान अफसर, सैमुअल कमलेशन, की कहानी ने पूरे देश का ध्यान खींचा है। 30 मई 2025 को दिल्ली हाई कोर्ट ने एक बड़ा फैसला सुनाया, जिसमें सैमुअल की बर्खास्तगी को सही ठहराया गया। वजह? उन्होंने अपनी ईसाई आस्था के कारण रेजिमेंट की साप्ताहिक धार्मिक परेड में हिस्सा लेने से मना कर दिया था। यह कहानी सिर्फ एक अफसर की नहीं, बल्कि हमारे देश की सेना में ड्यूटी और धर्म के बीच के टकराव की है।

सैमुअल की कहानी: सपनों और आस्था का टकराव

सैमुअल कमलेशन, एक युवा और जोशीला अफसर, जिन्होंने 2017 में भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के तौर पर कदम रखा। उनकी रेजिमेंट थी 3rd कैवेलरी—एक ऐसी टुकड़ी जिसमें सिख, जाट और राजपूत सैनिक एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश की रक्षा करते हैं। सैमुअल के लिए सेना में शामिल होना सिर्फ नौकरी नहीं था; यह था उनका जुनून, देश के लिए कुछ करने का सपना। लेकिन जल्द ही उनके सामने एक ऐसी चुनौती आई, जिसने उनके सपनों और उनकी ईसाई आस्था को आमने-सामने ला खड़ा किया।

हर हफ्ते उनकी रेजिमेंट में एक धार्मिक परेड होती थी, जिसमें मंदिर और गुरुद्वारे में प्रार्थना की जाती थी। ये परेड सिर्फ धार्मिक रस्में नहीं थीं; ये सैनिकों को एकजुट करने का तरीका थीं, जैसे स्कूल में सुबह की प्रेयर होती है, जो बच्चों को एक साथ लाती है। सैमुअल इस परेड में अपनी टुकड़ी के साथ तो जाते थे, लेकिन मंदिर या गुरुद्वारे के सबसे पवित्र हिस्से में जाने से मना कर देते थे। उनकी वजह? उनकी ईसाई आस्था, जो उन्हें दूसरों के धार्मिक स्थानों में पूजा करने से रोकती थी।

सैमुअल ने सेना से अनुरोध किया कि उन्हें इस हिस्से से छूट दी जाए। वो अपनी टुकड़ी के साथ परेड में शामिल होने को तैयार थे, लेकिन पवित्र स्थानों में प्रवेश नहीं करना चाहते थे। उन्होंने यह भी बताया कि उनके कैंप में कोई चर्च नहीं था, जहां वो अपनी प्रार्थना कर सकें। लेकिन सेना का कहना था कि एक अफसर को अपनी टुकड़ी का नेतृत्व करना होता है, चाहे बात ड्यूटी की हो या परेड की। सैमुअल को कई बार समझाया गया, मौके दिए गए, लेकिन वो अपने फैसले पर अड़े रहे। आखिरकार, 2017 में सेना ने उन्हें बर्खास्त कर दिया, क्योंकि उनका मना करना "अनुशासनहीनता" माना गया।

कोर्ट का फैसला: वर्दी जोड़ती है, धर्म नहीं

सैमुअल ने अपनी बर्खास्तगी के खिलाफ कोर्ट में अपील की। 30 मई 2025 को दिल्ली हाई कोर्ट ने इस मामले में फैसला सुनाया। जज नवीन चावला और शलिंदर कौर ने कहा, "सेना में वर्दी जोड़ती है, धर्म नहीं।" कोर्ट का मानना था कि सैमुअल का परेड में हिस्सा न लेना सिर्फ उनकी आस्था की बात नहीं थी, बल्कि एक वैध आदेश को न मानने की बात थी। सेना में एक अफसर का पहला कर्तव्य है अपनी टुकड़ी को एकजुट रखना, चाहे इसके लिए उसे अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को पीछे रखना पड़े।

कोर्ट ने यह भी साफ किया कि रेजिमेंट के नाम, जैसे सिख रेजिमेंट या जाट रेजिमेंट, या उनके युद्ध नारे, सिर्फ प्रेरणा देने के लिए हैं। ये धार्मिक नहीं, बल्कि सैनिकों को जोश दिलाने का तरीका हैं, जैसे कोई फुटबॉल टीम का नारा जो खिलाड़ियों को हौसला देता है। कोर्ट ने कहा कि सेना सभी धर्मों का सम्मान करती है और सैनिकों के लिए प्रार्थना की सुविधाएं देती है। लेकिन एक अफसर से उम्मीद की जाती है कि वो अपनी टुकड़ी के लिए मिसाल बने, न कि अपने निजी विश्वासों को प्राथमिकता दे।

सैमुअल ने कोर्ट में दलील दी कि उनके कैंप में चर्च न होने की वजह से उनकी आस्था को बराबर सम्मान नहीं मिला। लेकिन कोर्ट ने इसे खारिज करते हुए कहा कि यह मामला धार्मिक आजादी का नहीं, बल्कि ड्यूटी का है। अगर एक अफसर अपने विश्वासों को ड्यूटी से ऊपर रखेगा, तो ये सैनिकों के बीच एकता को कमजोर कर सकता है, जो युद्ध के मैदान में बेहद जरूरी है।

सेना में एकता: ड्यूटी से बड़ा कुछ नहीं

भारतीय सेना दुनिया की सबसे विविध सेनाओं में से एक है। इसमें हर धर्म, जाति और क्षेत्र के लोग एक साथ देश की रक्षा करते हैं। लेकिन यह एकता आसान नहीं आती। सेना में अनुशासन और एकजुटता सबसे ऊपर हैं, जैसे किसी स्कूल में नियमों का पालन करना जरूरी होता है। अगर एक टीचर कहे कि वो स्कूल की प्रेयर में हिस्सा नहीं लेगा, तो बच्चे क्या सोचेंगे? उसी तरह, अगर एक अफसर अपनी टुकड़ी के साथ परेड में पूरी तरह शामिल नहीं होता, तो सैनिकों का मनोबल टूट सकता है।

सेना का कहना है कि धार्मिक परेड का मकसद पूजा करना नहीं, बल्कि सैनिकों को एकजुट करना और उनमें जोश भरना है। ये परेड रेजिमेंट की परंपराओं का हिस्सा हैं, जो सैनिकों को उनकी विरासत से जोड़ती हैं। लेकिन सैमुअल की कहानी एक सवाल उठाती है—क्या ये परंपराएं सभी सैनिकों के लिए बराबर हैं? अगर कैंप में मंदिर और गुरुद्वारा है, लेकिन चर्च नहीं, तो क्या ये सही मायनों में धर्मनिरपेक्षता है? कोर्ट ने इस सवाल का सीधा जवाब नहीं दिया, लेकिन ये हमें सोचने पर मजबूर करता है कि सेना में सभी धर्मों को बराबर जगह कैसे दी जाए।

क्या सीख और क्या सवाल?

सैमुअल की कहानी और कोर्ट का फैसला हमें एक गहरे सवाल के सामने लाता है—जब निजी आस्था और ड्यूटी का टकराव हो, तो क्या सही है? भारतीय सेना का काम सिर्फ देश की सीमाओं की रक्षा करना नहीं, बल्कि देश की विविधता को एकजुट करना भी है। लेकिन इस एकता को बनाए रखने के लिए क्या हमें अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को पूरी तरह छोड़ देना चाहिए? सैमुअल ने अपनी आस्था को चुना, लेकिन इसके लिए उन्हें अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। दूसरी तरफ, सेना का कहना है कि अगर हर कोई अपनी शर्तों पर काम करेगा, तो एकता कैसे बनी रहेगी?

ये मामला हमें अपने जीवन में भी सोचने पर मजबूर करता है। चाहे ऑफिस हो, स्कूल हो, या कोई और जगह, हम सब कभी न कभी ऐसी स्थिति में पड़ते हैं, जहां हमें अपने विश्वास और जिम्मेदारी में से एक को चुनना पड़ता है। सेना के लिए ये फैसला और भी मुश्किल है, क्योंकि वहां एक गलती जिंदगियों को खतरे में डाल सकती है।

भविष्य में, सेना शायद कुछ नए तरीके अपना सकती है, जैसे ऐसी परंपराएं शुरू करना जो किसी धर्म से न जुड़ी हों, या सभी धर्मों के लिए बराबर सुविधाएं देना, जैसे हर कैंप में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और चर्च। इससे न सिर्फ एकता बनी रहेगी, बल्कि हर सैनिक को लगेगा कि उसकी आस्था का सम्मान हो रहा है।

एक कठिन लेकिन जरूरी सबक

सैमुअल कमलेशन की कहानी हमें दिखाती है कि ड्यूटी और धर्म का टकराव कोई आसान सवाल नहीं है। दिल्ली हाई कोर्ट ने सेना के पक्ष में फैसला देकर साफ किया कि वर्दी की एकता सबसे ऊपर है। लेकिन सैमुअल का सवाल—चर्च की कमी और धार्मिक परेड में हिस्सा लेने की मजबूरी—हमें ये सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारी सेना और समाज में सभी धर्मों को सचमुच बराबर सम्मान मिलता है।

ये कहानी हमें एक सबक देती है: एकता और अनुशासन के लिए कभी-कभी व्यक्तिगत बलिदान देना पड़ता है। लेकिन साथ ही, ये हमें एक सवाल भी छोड़ जाती है—क्या हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं, जहां हर किसी की आस्था का सम्मान हो, और फिर भी हम एक साथ, एक वर्दी में, देश के लिए खड़े हों? जवाब आसान नहीं, लेकिन इस सवाल पर सोचना हम सबकी जिम्मेदारी है।

भक्ति, समर्पण और कृपा का अद्वितीय संगम

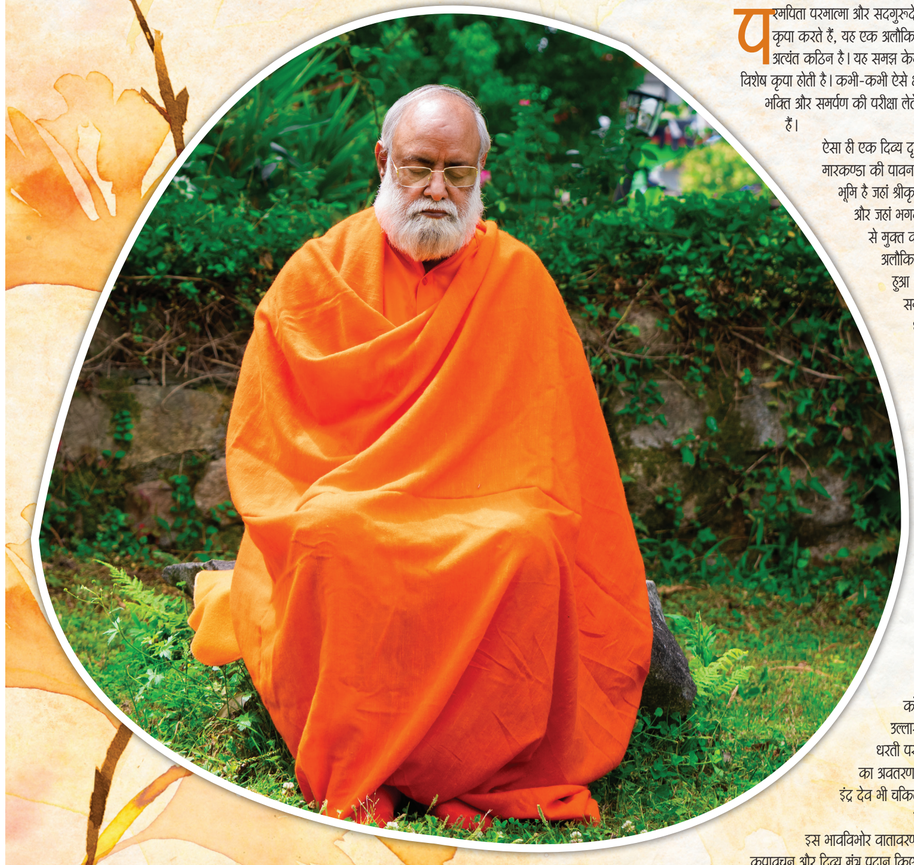

परमपिता परमात्मा और सद्गुरुदेव जी अपने भक्तों पर कब, क्या और कैसे कृपा करते हैं, यह एक अलौकिक और अद्भुत रहस्य है, जिसे समझना अत्यंत कठिन है। यह समझ केवल उन्हीं को प्राप्त होती है, जिन पर उनकी विशेष कृपा होती है। कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब प्रभु अपने भक्तों की भक्ति और समर्पण की परीक्षा लेते हैं, और तत्क्षण कृपा का खजाना लुटा देते हैं।

ऐसा ही एक दिव्य दृश्य हरियाणा के कुरुक्षेत्र और शाहबाद मारकण्डा की पावन धरा गोल्ड़ी में देखने को मिला। यह वही भूमि है जहां श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था और जहां भगवान शिव ने बालक मार्कण्डेय को यमपाश से मुक्त कर चिरायु होने का वरदान दिया था। इस अलौकिक भूमि पर 3–4 मई 2025 को आयोजित हुआ — प्रभु कृपा दुख निवारण दो दिवसीय समागम, जिसे भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के सेवकों द्वारा आयोजित किया गया।

कृपा की वर्षा में भीगती संगत — भक्ति का अनुपम उदाहरण

समागम के दूसरे दिन, रविवार 4 मई की रात, अचानक मौसम बिगड़ गया। तेज़ तूफान, मूसलधार बारिश, बिजली की कड़कड़ाहट और पंडाल का जलमग्न हो जाना — सबकुछ सामान्य इवेंट को बाधित करने के लिए काफी होता, लेकिन संगत की भक्ति डगमगाई नहीं। बिजली और साउंड बंद होने के बावजूद, हज़ारों की संख्या में भक्त खुले आसमान के नीचे घंटों तक बारिश में भीगते रहे, नाचते-गाते रहे, और अपने सद्गुरुदेव जी के वचनों की प्रतीक्षा करते रहे।

यह दृश्य अलौकिक था — घनघोर वर्षा को भी संगत प्रभु की कृपा मानकर आत्मिक उल्लास में भीग रही थी। ऐसा लग रहा था मानो धरती पर स्वयं मां दुर्गा, भगवान शिव और श्रीकृष्ण का अवतरण हुआ हो। संगत का समर्पण देखकर स्वयं इंद्र देव भी चकित रह गए होंगे।

सद्गुरुदेव जी का कृपा वर्षा व अमूल्य ज्ञान

इस भावविभोर वातावरण में, सद्गुरुदेव जी ने संगत को अभूतपूर्व कृपावचन और दिव्य मंत्र प्रदान किए। उन्होंने कहा कि परम शक्ति मां दुर्गा इस ब्रह्मांड की प्रथम जगद्गुरु हैं, जिन्होंने ३३ कोटि देवताओं सहित हमें सबको जन्म दिया। ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी उन्हीं की सृजना हैं।

पाठ की कृपा से एलर्जी और दुर्घटनाएं हुई समाप्त

स्थान: मोगा । अनुभवी: अंगूरी देवी

अंगूरी देवी जी ने बताया कि उन्हें भयंकर एलर्जी थी, हाथ-पैरों में सूजन और शरीर में अनेक समस्याएं थीं। गुरूदेव जी के आशीर्वाद और नियमित पाठ से सभी समस्याएं समाप्त हो गईं।

उनकी बेटी के दो ऑपरेशन भी बिना किसी जटिलता के सफल रहे। बेटे का एक्सीडेंट भी हुआ था, लेकिन वह भी पूर्ण रूप से ठीक हो गया।

अस्थमा से मिली मुक्ति, इनहेलर हुआ बंद

स्थान: जालंधर । अनुभवी: हर्ष अरोड़ा

हर्ष अरोड़ा जी ने कहा कि बचपन से उन्हें अस्थमा था और वे नियमित इनहेलर का प्रयोग करते थे। पाठ और मिरेकल वंडर वी वाश के नियमित उपयोग से उनका इनहेलर छूट गया है और अब उन्हें इसकी कोई आवश्यकता नहीं रहती। इसके अतिरिक्त उन्हें स्कॉलरशिप भी प्राप्त हुई, जिसे वे गुरूदेव जी की कृपा मानते हैं।

पढ़ाई में रुचि बढ़ी, घर का सपना हुआ साकार

स्थान: बिहार । अनुभवी: साक्षी

साक्षी जी ने बताया कि पाठ से उनके जीवन में कई सकारात्मक परिवर्तन आए। पढ़ाई में रुचि बढ़ी और वे प्रथम श्रेणी में पास हुईं। पहले उनके पास रहने के लिए खुद का घर नहीं था, एक छोटे से किराए के कमरे में रहती थीं। लेकिन पाठ की कृपा से अब उनका अपना घर बन गया है। मिरेकल वंडर वी वाश से भी जीवन में बहुत शांति और संतुलन मिला।

कोढ़ और एलर्जी से मिली मुक्ति, जीवन में लौटी आशा

स्थान: हैदराबाद । अनुभवी: बृजरानी

बृजरानी जी ने बताया कि उन्हें पूरे शरीर में भयंकर एलर्जी हो गई थी, और कोढ़ हो गया था। उनका जीवन निराशा में घिर गया था। सहारनपुर समागम में गुरूदेव जी ने अवधान करवाया और कहा कि "सबकी बीमारियां कट गई हैं।" उसी क्षण से उनके सभी रोग ठीक हो गए। उन्होंने इसे नया जीवन मिलने के रूप में अनुभव किया।

गांठ हुई समाप्त, जीवन में लौटी सहजता

स्थान: सोनीपत । अनुभवी: फूलवती

फूलवती जी ने बताया कि उनकी बेटी को गांठ हो गई थी। उन्होंने नियमित पाठ और गुरूदेव जी की कृपा से तीन महीनों में ही यह गांठ स्वयं समाप्त हो जाने का चमत्कार देखा। उनके स्वयं के शरीर में भी कई प्रकार की बीमारियां थीं, जो पाठ की शक्ति से पूरी तरह ठीक हो गईं।

कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से भी मिली राहत

स्थान: अंबाला सिटी । अनुभवी: रानी वर्मा

रानी वर्मा जी ने अत्यंत भावुक होकर बताया कि उन्हें गंभीर कब्ज की समस्या थी, जिसका कोई उपचार नहीं मिल रहा था। डॉक्टरों ने यूटरस निकालने की बात कही और उन्हें कैंसर की तीसरी या चौथी स्टेज में बताया। यहां तक कि ब्रेस्ट में भी कैंसर की गांठ पाई गई लेकिन गुरूदेव जी की कृपा और नियमित पाठ करने से उनका कोई ऑपरेशन नहीं हुआ। कब्ज ठीक हो गई और ब्रेस्ट की गांठ भी समाप्त हो गई।

सद्गुरुदेव जी ने यह भी कहा कि जब कोई व्यक्ति पद प्राप्त करता है, तो वह इसे अपनी मेहनत का परिणाम मानने लगता है और मां दुर्गा की कृपा को भूल जाता है। लेकिन जो व्यक्ति अपने पद को मां दुर्गा की कृपा मानते हुए, निःस्वार्थ भाव से कार्य करता है, वह अमर हो जाता है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मां दुर्गा ही इस सृष्टि की स्वामिनी हैं, और जो व्यक्ति सच्चे मन से उनका जप, पाठ और पूजा करता है, वह पाप और कष्टों से मुक्त हो जाता है। सद्गुरुदेव जी ने कहा कि वह ज्ञान, जो उन्हें वर्षों की तपस्या के बाद प्राप्त हुआ, वह यह है कि मां दुर्गा ही जगत की जननी हैं — और उन्हीं के नाम के पाठ से सब कुछ संभव है।

संतोष, सेवा और त्याग की मिसाल — ब्रह्म स्वरूपणी बहन ऋतु खुशबू जी

समागम में सद्गुरुदेव जी ने परम आदरणीय बहन ऋतु खुशबू जी की भी महिमा बताई। उन्होंने कहा कि ऋतु खुशबू जी ने लगातार आठ वर्षों तक एक कमरे में रहकर साधना की है। वे साक्षात ब्रह्म स्वरूपणी हैं। उनके दर्शन और चरणरज से सारे पाप, दुख और कष्ट समाप्त हो जाते हैं। वे उनकी बेटी होकर भी मातातुल्य हैं।

सेवा कार्य और जन्मोत्सव समारोह

समागम में जहां भक्ति और अध्यात्म का सागर बहा, वहीं सेवा भाव का अद्वितीय उदाहरण भी देखने को मिला। विशाल रक्तदान शिविर, निशुल्क सर्व रोग निवारक स्वास्थ्य जांच एवं उपचार शिविर का आयोजन किया गया, जिससे बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हुए। दोनों दिन संगत के लिए लंगर और भोजन प्रशाद की सेवा भी अनवरत चलती रही।

इस अवसर पर परम पूज्य गुरू मां जी का जन्मदिन भी मनाया गया। केक काटा गया, नृत्य और संगीत के साथ संगत ने उनका जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया। महाब्रह्म मयखाना जी का स्वागत ढोल-नगाड़ों के साथ हुआ। विश्व प्रसिद्ध भजन गायक श्री संजय पचौरी जी और उनकी टीम ने महाब्रह्म मयखाना जी की आरती गाकर संगत को भक्ति में सराबोर कर दिया।

दिमाग का जादू: कल्पना से कैसे बदले ज़िंदगी

क्या आपने कभी सोचा कि सिर्फ़ अपने दिमाग में कुछ कल्पना करने से आपकी ज़िंदगी बेहतर हो सकती है? मान लीजिए, आप एक परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, या कार्यालय में बॉस के सामने प्रस्तुति देना है, या शायद एक पारिवारिक समारोह में आत्मविश्वास से बोलना चाहते हैं। डर लगता है, तनाव होता है, लेकिन अगर हम कहें कि आप अपने दिमाग की ताकत से इन चुनौतियों को आसान बना सकते हैं? यह कोई जादू नहीं, बल्कि विज्ञान है—कल्पना, यानी अपनी कल्पना में पहले से वह पल जी लेना। इस लेख में हम आपको बताएँगे कि कल्पना क्या है, यह कैसे काम करता है, और आप इसे अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कैसे उपयोग कर सकते हैं।

कल्पना की ताकत: दिमाग का सुपरपावर

सपने तो हम सब देखते हैं, लेकिन कल्पना उससे अलग है। यह एक तरह का मानसिक अभ्यास है, जैसे आप अपने दिमाग में कोई फ़िल्म चला रहे हों। उदाहरण के लिए, मान लीजिए, आप एक क्रिकेट मैच में बल्लेबाज़ी करने जा रहे हैं। आप अपने दिमाग में पहले से कल्पना करते हैं कि गेंद कैसे आएगी, आप कैसे स्विंग करेंगे, और भीड़ कैसे तालियाँ बजाएगी। यह सिर्फ़ ख्याली पुलाव नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली तकनीक है जो आपके आत्मविश्वास को बढ़ाती है।

विज्ञान कहता है कि जब आप कल्पना करते हैं, तो आपका मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है। वह हिस्सा जो चित्र देखने का काम करता है (जैसे आँखों से देखना), वह बिना कुछ देखे भी सक्रिय हो जाता है। साथ ही, आपका मस्तिष्क वह हिस्सा भी सक्रिय करता है, जो ध्यान और योजना बनाने में मदद करता है। आसान शब्दों में, कल्पना आपके दिमाग को "अभ्यास" करने का मौका देता है, बिना शारीरिक रूप से कुछ किए।

एक वास्तविक उदाहरण लें। दिल्ली की रहने वाली 16 साल की रिया को स्कूल की वाद-विवाद प्रतियोगिता में बोलने से डर लगता था। उसने अपने शिक्षक की सलाह पर कल्पना शुरू किया। हर रात, वह 10 मिनट के लिए कल्पना करती थी कि वह आत्मविश्वास से मंच पर बोल रही है, दर्शक तालियाँ बजा रहे हैं। धीरे-धीरे, उसका डर कम हुआ, और उसने वाद-विवाद प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार जीता! यह कल्पना का कमाल था, जो उसके दिमाग को तैयार करता गया।

हर कोई कर सकता है: आप भी कल्पना सीख सकते हैं

अब आप सोच रहे होंगे, "मेरा दिमाग तो इतना स्पष्ट रूप से कुछ कल्पना नहीं कर पाता।" कोई बात नहीं! विज्ञान कहता है कि कल्पना एक कौशल है, जिसे अभ्यास से बेहतर किया जा सकता है। कुछ लोगों (लगभग 1-4%) को एक खास स्थिति होती है, जिसमें वे मानसिक चित्र नहीं बना पाते। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे कल्पना का फायदा नहीं उठा सकते। वे भावनाओं, ध्वनियों, या कदम-दर-कदम विचारों का उपयोग कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, मुंबई में एक सेल्समैन, अजय, को ग्राहकों के सामने प्रस्तुति देने में समस्या होती थी। उसे चित्र कल्पना करने में दिक्कत थी, लेकिन उसने अपने प्रशिक्षक की मदद से कल्पना का अलग तरीका आज़माया। वह मानसिक रूप से अपने प्रस्तुति के शब्दों और लहजे को दोहराता था, जैसे रेडियो में सुन रहा हो। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा, और उसकी बिक्री 30% बेहतर हो गई!

विज्ञान भी यह समर्थन करता है। एक अध्ययन में गोल्फ खिलाड़ियों को नकारात्मक और सकारात्मक कल्पना करने को कहा गया। जो नकारात्मक विचार कल्पना करते थे, उनकी सटीकता घटी, और जो सकारात्मक चित्र बनाते थे, वे बेहतर प्रदर्शन करते थे। इसका मतलब, आप जो कल्पना करते हैं, वह आपके परिणामों को प्रभावित करता है। तो सकारात्मक सोचें, और अपने दिमाग को सफलता की तस्वीर दिखाएँ।

नया सोचें, नया करें

कल्पना आपके दिमाग का सुपर-उपकरण है, जो बिल्कुल मुफ़्त है। यह आपके मस्तिष्क को फिर से प्रोग्राम करने का तरीका है, ताकि आप चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना कर सकें। चाहे वह परीक्षा हो, नौकरी हो, या व्यक्तिगत ज़िंदगी का तनाव, आप अपनी कल्पना की ताकत से उसे आसान बना सकते हैं।

तो, आज से शुरू करें। कोई छोटा-सा लक्ष्य चुनें—शायद कार्यालय में आत्मविश्वास से अपनी बात रखना, या जिम में नया व्यायाम आज़माना। 5 मिनट कल्पना करें, और देखें कि आपका आत्मविश्वास कैसे बढ़ता है। अपने दिमाग की शक्ति को कम न समझें। आपका मस्तिष्क एक सुपरहीरो है, और कल्पना उसकी केप है। इसे पहनें, और अपनी ज़िंदगी को चमकने दें।

ज़िंदगी में कल्पना का उपयोग कैसे करें

कल्पना कोई जटिल विज्ञान नहीं है। यह एक सरल उपकरण है, जिसे आप कहीं भी, कभी भी उपयोग कर सकते हैं। चाहे आप विद्यार्थी हों, नौकरी करते हों, या माता-पिता हों, यह आपके लिए बहुत उपयोगी हो सकता है। यहाँ एक आसान मार्गदर्शिका है कि आप कल्पना शुरू कैसे करें:

1. लक्ष्य चुनें: कोई विशिष्ट चीज़ चुनें, जैसे परीक्षा में अच्छे अंक, नौकरी साक्षात्कार में आत्मविश्वास, या पारिवारिक तनाव को शांति से संभालना।

2. शांत जगह ढूँढें: 5-10 मिनट के लिए ऐसी जगह बैठें जहाँ कोई रुकावट न हो। फोन को बंद कर दें।

3. विस्तार में कल्पना करें: अपने लक्ष्य को मानसिक रूप से जी लें। जैसे, अगर साक्षात्कार है, तो कल्पना करें कि आप अच्छे कपड़े पहने हैं, आत्मविश्वास से जवाब दे रहे हैं, साक्षात्कारकर्ता प्रभावित हो रहा है। ध्वनियाँ, गंध, और भावनाएँ भी जोड़ें—जैसे कमरे की रोशनी, हाथ मिलाने की अनुभूति।

4. रोज़ अभ्यास करें: रोज़ 5-10 मिनट कल्पना करें। जितना अभ्यास करेंगे, उतना आसान और प्रभावी होगा।

5. नकारात्मक विचारों से बचें: अगर डर या असफलता का विचार आए, तो उसे सचेत रूप से सकारात्मक चित्र से बदल दें।

एक और उदाहरण लें। लखनऊ की शालिनी, जो एक अकेली माँ हैं, को अपने बेटे के स्कूल के मुद्दों से तनाव था। उसने कल्पना आज़माया। हर सुबह, वह कल्पना करती थी कि वह शांति से अपने बेटे से बात कर रही है, और वह समझ रहा है। इससे उसका धैर्य बढ़ा, और घर का माहौल बेहतर हुआ।

कल्पना तनाव को कम करने, आत्मविश्वास बढ़ाने, और निर्णय लेने की क्षमता को बेहतर करने में मदद करता है। चाहे आप खाना बनाना सीख रहे हों, सार्वजनिक बोलने का अभ्यास कर रहे हों, या जिम में नया व्यायाम आज़मा रहे हों, यह तकनीक काम आ सकती है।

सच में काम करता है? चलिए शंकाएँ दूर करें

कल्पना सुनने में जादुई लगता है, लेकिन क्या यह वास्तव में काम करता है? बिल्कुल! ओलंपिक खिलाड़ी, बड़े अधिकारी, और चिकित्सक इसका उपयोग करते हैं। विज्ञान भी कहता है कि कल्पना आपके मस्तिष्क को वास्तविक अभ्यास जितना मजबूत बना सकता है। लेकिन, एक बात स्पष्ट करें—कल्पना कोई जादुई छड़ी नहीं है। यह तब सबसे अच्छा काम करता है, जब आप इसे वास्तविक प्रयास के साथ जोड़ते हैं।

उदाहरण के लिए, अगर आप परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, तो सिर्फ़ कल्पना करने से अंक नहीं आएँगे। आपको पढ़ना भी पड़ेगा। लेकिन कल्पना आपके दिमाग को शांत और केंद्रित रखेगा, ताकि आप दबाव में बेहतर प्रदर्शन करें। अगर आपको लगता है कि आप कल्पना में "अच्छे" नहीं हैं, तो चिंता न करें। छोटे से शुरू करें। जैसे, अगर आप खाना बनाना सीख रहे हैं, तो कल्पना करें कि आप पूरी तरह से नुस्खा का पालन कर रहे हैं, व्यंजन शानदार बन रहा है। धीरे-धीरे, आपका दिमाग इस कौशल में बेहतर हो जाएगा।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

ईद पर पाबंदी

पाकिस्तान में अहमदिया मुसलमानों पर 5 लाख का जुर्माना क्यों?

@ रिंकू विश्वकर्मा

पाकिस्तान में ईद मनाने पर 5 लाख का जुर्माना लगाया जा रहा है। एक फरमान निकाला गया है कि अगर आप ईद उल अज़हा में जानवरों की कुर्बानी करते पाए गए तो आप पर कानूनी कार्रवाई कर दी जाएगी। लेकिन ये शर्त सभी लोगों पर लागू नहीं हो रही है। यह फरमान निकाला गया है पाकिस्तान में रहने वाली अहमदिया कम्युनिटी के लिए। पाकिस्तान के पंजाब और सिंध में अहमदियाओं से हलफनामे भरवाए जा रहे हैं कि वादा करो कि ईद पर कुर्बानी नहीं दोगे।

यह वही अहमदिया कम्युनिटी है जो पाकिस्तान में बरसों से निशाने पर है। आए दिन इन्हें भीड़ पीट-पीट कर मार डालती है या इनकी इबादतगाहों को निशाना बनाया जाता है। खुद पाकिस्तान के संविधान ने इस समुदाय से मुसलमान होने का दर्जा छीन लिया है। हालांकि अहमदिया लोग खुद को मुसलमान ही मानते हैं। अपनी मजहबी पहचान के साथ-साथ वो खुद को सच्चा पाकिस्तानी भी कहते हैं।

जो पाकिस्तान में रहते हैं, अहमदियाओं के पहले खलीफा खलीफतुल मसीह ने तो जिन्ना के साथ शाना बशाना पाकिस्तान बनाने की तहरीक में हिस्सा भी लिया था। फिर पाकिस्तान में इन पर इतना जुल्म क्यों? ये लोग हैं कौन? और इनसे पाकिस्तान में मुसलमान होने का दर्जा छीना कैसे गया? और इस बार ईद उल अज़हा में इन पर क्या पाबंदियां लगाई गई हैं? इन सारी चीजों पर हम बात करने वाले हैं आज के एपिसोड में।

सबसे पहले तो आप यह समझ लीजिए कि अहमदिया होते कौन हैं। अहमदिया मुसलमान एक ऐसे इस्लामी संप्रदाय से ताल्लुक रखते हैं जिसकी स्थापना 19वीं सदी में ब्रिटिश इंडिया में हुई थी। यानी जब हिंदुस्तान पर अंग्रेज शासन था। अहमदियाओं की जनसंख्या पूरी दुनिया में लगभग 2 करोड़ बताई जाती है। उनकी दुनिया भर में 16,000 से ज्यादा इबादतगाहें हैं। उनका खुद का एक टीवी चैनल भी है जिसका नाम है एमटीए इंटरनेशनल।

यह समुदाय मुख्यधारा के जो दो बड़े पंथ हैं। सुन्नी

और शिया मुसलमान। उनसे कई मामलों में अलग मान्यता रखता है, खासतौर पर आखिरी पैगंबर या आखिरी प्रॉफेट के मामले पर। इस्लामिक मान्यता के मुताबिक पैगंबर मोहम्मद आखिरी नबी या अंतिम ईशदूत थे। कुरान में भी यही बात दोहराई गई है और कहा गया है कि पैगंबर के बाद अब कोई अगला ईशदूत या पैगंबर या प्रॉफेट धरती पर नहीं भेजा जाएगा।

इस्लामिक मान्यताओं के मुताबिक अब तक लगभग 1,24,000 के करीब पैगंबर दुनिया में आए हैं। ये लोग अलग-अलग वक्त और जगह पर ईश्वर का संदेश लेकर आते थे। इस्लामिक मान्यताओं के मुताबिक ईसा (जीसस क्राइस्ट), मूसा (मोजस), दाऊद (डेविड), इब्राहिम। ये सब पैगंबर हुए हैं और इसी कड़ी में जो अंतिम थे वो थे पैगंबर मोहम्मद।अब एक मुसलमान होने के लिए तीन शर्तें जरूरी बताई गई हैं।

तौहीद — यानी एक ईश्वर में विश्वास रखना।

रिसालत — यानी अब तक आए सभी पैगंबरों पर यकीन रखना और यह भी मानना कि मोहम्मद ही आखिरी पैगंबर थे।

आखिरत — यानी जजमेंट डे पर यकीन रखना जिस दिन सभी इंसानों की नेकी और बदी का फैसला ईश्वर करेगा।

अहमदिया लोग एक ईश्वर को तो मानते हैं और आखिरत के दिन पर भी उनका यकीन है। लेकिन दूसरी शर्त यानी रिसालत वाले बिंदु पर उनकी कहानी कुछ और है और सारा विवाद इसी के इर्द-गिर्द है। अहमदिया मानते हैं कि पैगंबर मोहम्मद आखिरी नबी नहीं थे, बल्कि मिर्जा अहमद कादियानी आखिरी नबी थे।

अब इसमें भी एक पेंच है। दरअसल ईश्वर दो तरह के पैगंबर भेजते आए हैं। इस्लामिक मान्यताओं के मुताबिक एक जिन्हें कोई शरीयत दी जाती है, जिन पर अलग से एक किताब नाजिल होती है। जैसे पैगंबर मोहम्मद जिनके साथ कुरान धरती पर भेजी गई थी। और दूसरे तरह के पैगंबर वो होते हैं जिनके साथ कोई किताब या कोई नया नियम नहीं उतारा जाता। वो बस समाज सुधार के लिए भेजे जाते हैं, जैसे पैगंबर इब्राहिम या पैगंबर नूह (नोआ)।अहमदिया कहते हैं कि मिर्जा अहमद ऐसे पैगंबर हैं जो समाज सुधार के लिए आए। पर यह भी इस्लाम के कोर बिलीफ के खिलाफ जाता है।

मिर्जा अहमद वही शख्स हैं जिन्होंने अहमदिया संप्रदाय की नींव रखी थी और यहीं से पूरा विवाद शुरू भी हुआ। उनकी पैदाइश हुई थी 13 फरवरी 1835 को ब्रिटिश इंडिया वाले पंजाब के कादियान में। इसलिए उनका पूरा नाम पड़ा मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी।

पाकिस्तान में अहमदिया समुदाय के खिलाफ जारी धार्मिक भेदभाव और उत्पीड़न की घटनाएं चिंता का विषय हैं। हाल ही में पंजाब और सिंध प्रांतों में अहमदिया मुसलमानों से शपथपत्र भरवाए गए हैं, जिसमें उन्हें ईद-उल-अज़हा (बकरीद) पर जानवरों की कुर्बानी न करने की प्रतिबद्धता करनी पड़ी है। इस आदेश का उल्लंघन करने पर 5 लाख पाकिस्तानी रुपये का जुर्माना लगाने की चेतावनी दी गई है ।

अहमदिया समुदाय को पाकिस्तान में 1974 में संविधान संशोधन के माध्यम से गैर-मुस्लिम घोषित किया गया था। इसके बाद से उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन, पूजा स्थलों पर हमलों, और सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ रहा है। पुलिस द्वारा उनके घरों की तलाशी लेना और धार्मिक अनुष्ठानों में हस्तक्षेप करना आम बात हो गई है ।

पाकिस्तान में अहमदिया समुदाय की इबादतगाहों पर हमले, कब्रों की बेअदबी, और धार्मिक प्रतीकों के प्रयोग पर प्रतिबंध जैसे कृत्य मानवाधिकारों का उल्लंघन हैं। इन घटनाओं के बावजूद, पाकिस्तान की सरकार और न्यायपालिका की ओर से प्रभावी कार्रवाई की कमी दिखती है।

भारत में भी अहमदिया समुदाय के खिलाफ भेदभाव की घटनाएं सामने आई हैं। उदाहरण के लिए, आंध्र प्रदेश के वक्फ बोर्ड ने 2012 में एक फतवे के आधार पर अहमदिया मुसलमानों को गैर-मुस्लिम घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया था, जिसे बाद में अदालत ने स्थगित कर दिया ।

इस स्थिति में अंतरराष्ट्रीय समुदाय और मानवाधिकार संगठनों की जिम्मेदारी बनती है कि वे पाकिस्तान में अहमदिया समुदाय के अधिकारों की रक्षा के लिए दबाव बनाएं और उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए पाकिस्तान सरकार को प्रेरित करें।

शाओमी का एक्सरिंग 01
एक छोटा चिप, बड़ा सपना

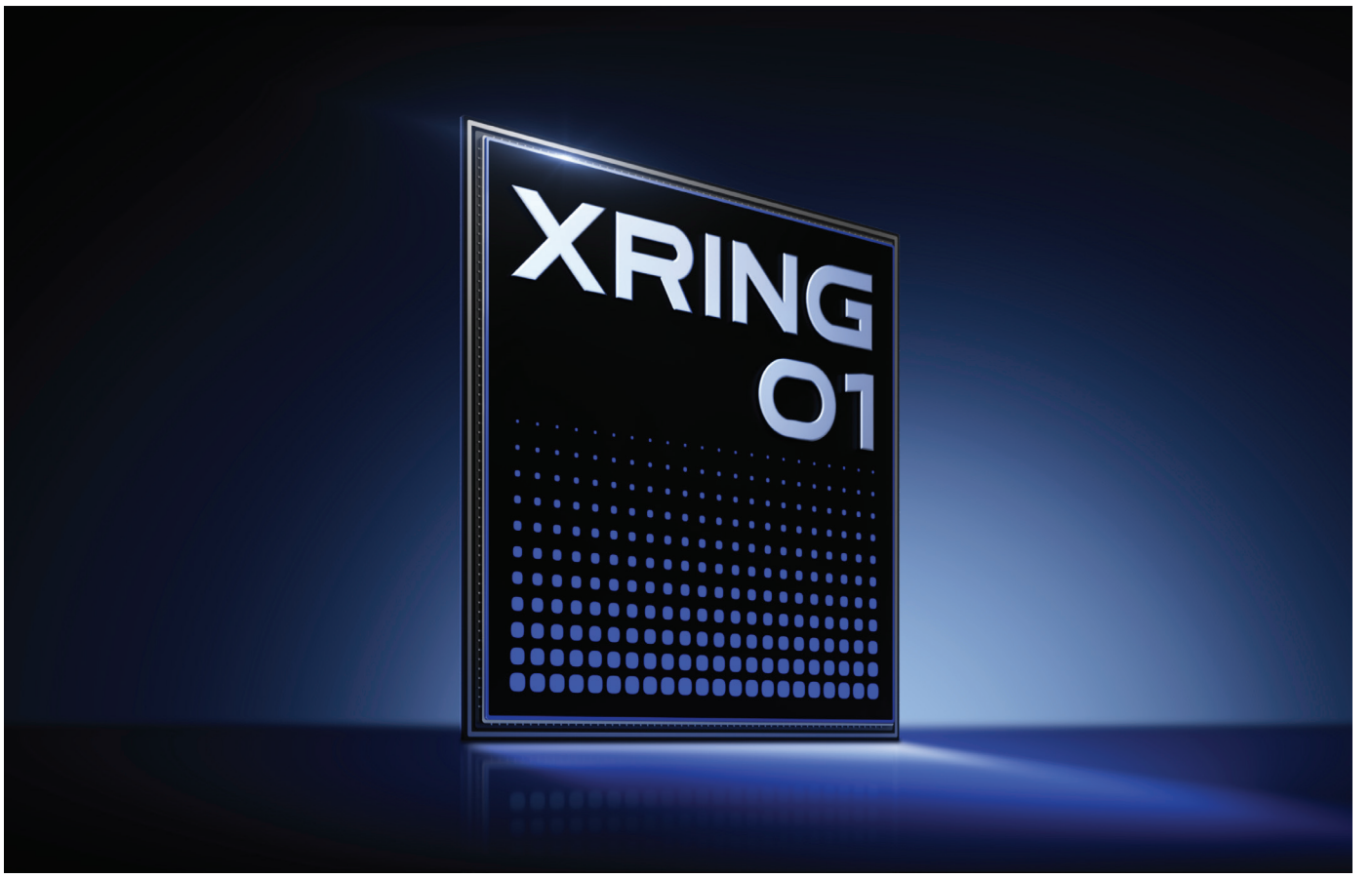

क्या आपने कभी सोचा कि आपका स्मार्टफोन इतना तेज़ कैसे चलता है? फ़ोटो एक सेकंड में क्लिक हो जाते हैं, गेम बिना रुकावट के चलते हैं, और बैटरी भी दिनभर टिकती है। यह सब एक छोटी-सी चीज़ का कमाल है—एक चिप, जो आपके फोन का "दिमाग" है। आज हम बात करेंगे एक ऐसी चिप की, जो न सिर्फ़ आपके फोन को बदल सकती है, बल्कि दुनिया के टेक गेम को भी हिला सकती है। यह है शाओमी का एक्सरिंग 01, एक छोटा-सा चिप जिसे चीन की सरकार ने भी तारीफ़ की है। लेकिन क्या यह चिप सचमुच इतना बड़ा है? और इसका आपके जीवन से क्या कनेक्शन है?

एक नई जंग का आगाज़

शाओमी को आप जानते हैं—वह कंपनी जो बजट स्मार्टफोन्स के लिए मशहूर है। लेकिन अब शाओमी ने कुछ बड़ा किया है। उसने एक नया चिप बनाया है, एक्सरिंग 01, जो इतना पावरफुल है कि ऐपल और क्वालकॉम जैसी बड़ी कंपनियों के चिप्स से टक्कर ले सकता है। यह चिप एक छोटा-सा "पावरहाउस" है, जो आपके फोन को तेज़, स्मार्ट, और एनर्जी-सेविंग बनाता है। इस चिप को बनाने में शाओमी ने 4 साल लगाए, 13.5 बिलियन युआन (लगभग 167 करोड़ यूरो) खर्च किए, और 2,500 से ज़्यादा इंजीनियर्स ने दिन-रात काम किया।

यह चिप 3-नैनोमीटर का है—मतलब, इतना छोटा कि एक दाने के बराबर जगह में पूरा शहर जैसा टेक्नोलॉजी फिट हो सकता है। इसमें 10 "कोर्स" हैं—सोचिए, जैसे एक टीम में 10 अलग-अलग खिलाड़ी, हर एक अपना काम भारी स्पीड से करता है। यह चिप शाओमी के नए फ्लैगशिप डिवाइसेज़, जैसे शाओमी 15एस प्रो फोन और पैड 7 अल्ट्रा टैबलेट, में इस्तेमाल हो रहा है। लेकिन यह सिर्फ़ टेक्नोलॉजी की बात नहीं—यह एक बड़ी ग्लोबल रेस का हिस्सा है।

दुनिया के टेक मार्केट में चिप्स बनाने का काम एक जंग की तरह है। अमेरिका के पास क्वालकॉम और ऐपल हैं, जो इस फील्ड के राजा हैं। चीन भी इस रेस में आगे बढ़ना चाहता है, और शाओमी का यह चिप उसी दिशा में एक कदम है। चीन की सरकार ने इस चिप की तारीफ़ करके यह दिखाया है कि यह उनके लिए कितना इम्पॉर्टेंट है। लेकिन क्या यह चिप सचमुच गेम चेंजर है? या फिर यह सिर्फ़ एक शुरुआत है?

आपके फोन का फ्यूचर

अब सोचिए, यह चिप आपके लिए क्या मतलब रखता है? सबसे पहले, यह आपके फोन को और बेहतर बना सकता है। एक्सरिंग 01 के साथ आपका फोन तेज़ी से चलेगा—गेमिंग हो, वीडियो एडिटिंग हो, या मल्टीटास्किंग—सब कुछ स्मूथ होगा। फ़ोटोज़ के लिए कैमरा और शार्प होगा, और बैटरी भी ज़्यादा देर तक चलेगी। और सबसे बड़ी बात? जब कंपनियाँ अपने खुद के चिप्स बनाती हैं, तो फोन्स के दाम कम हो सकते हैं। यानी, आपको हाई-एंड टेक्नोलॉजी सस्ते में मिल सकती है।

शाओमी का यह चिप न सिर्फ़ आपके फोन को बदल सकता है, बल्कि मार्केट में कॉम्पिटिशन भी बढ़ा सकता है। जब ऐपल और क्वालकॉम जैसी कंपनियाँ देखेंगी कि शाओमी उनके लेवल पर आ रहा है, तो वे भी अपने प्रोडक्ट्स को और बेहतर करेंगी। इससे आपको, एक नॉर्मल कंज्यूमर को, फायदा होगा—ज़्यादा फीचर्स, कम दाम। लेकिन यह इतना सिंपल नहीं है। इस चिप के पीछे एक और बड़ा खेल चल रहा है, जो दुनिया के दो बड़े देशों—अमेरिका और चीन—के बीच का है।

अमेरिका-चीन का टेक टक्कर

यह चिप सिर्फ़ टेक्नोलॉजी की बात नहीं—यह एक जियोपॉलिटिकल कहानी है। अमेरिका और चीन के बीच टेक की दुनिया में एक बड़ी लड़ाई चल रही है। अमेरिका ने चीन के टेक कंपनियों, जैसे हुवावे, पर रेस्ट्रिक्शन्स लगाए हैं, ताकि उनका ग्रोथ रुक जाए। इन रेस्ट्रिक्शन्स का मतलब है कि चीनी कंपनियों को एडवांस्ड चिप्स या चिप बनाने के टूल्स मिलना मुश्किल हो गया है। लेकिन शाओमी का एक्सरिंग 01 दिखाता है कि चीन हार नहीं मान रहा। यह चिप ताइवान के टीएसएमसी कंपनी ने बनाया है, जो दुनिया के सबसे एडवांस्ड चिप फैक्ट्रीज़ में से एक है। यानी, चीन अभी भी ग्लोबल सप्लाई चेन पर डिपेंड करता है।

लेकिन यहाँ एक ट्विस्ट है। अगर अमेरिका टीएसएमसी को बोल दे कि वह चीनी कंपनियों के लिए चिप्स न बनाए, तो शाओमी के लिए मुश्किल हो सकती है। हुवावे के साथ ऐसा ही हुआ था जब उसका चिप सप्लाई बंद हो गया। शाओमी इसके लिए "प्लान बी" बना रहा है, शायद चीन के अपने चिप फैक्ट्रीज़, जैसे एसएमआईसी, के साथ। लेकिन एसएमआईसी अभी टीएसएमसी जितना एडवांस्ड नहीं है। यह एक ऐसा खेल है जहाँ हर मूव सोच-समझकर खेलनी पड़ती है।

इस लड़ाई का असर आप पर भी पड़ सकता है। अगर अमेरिका और चीन के बीच यह टेंशन बढ़ती है, तो आपके फोन के दाम या अवेलेबिलिटी पर फ़र्क पड़ सकता है। या शायद, आपके पास एक दिन एक ऐसा फोन होगा जो पूरा चीन में बना हो, बिना किसी विदेशी कंपनी के हेल्प के। यह सोचने वाली बात है—क्या हम एक ऐसी दुनिया की तरफ़ जा रहे हैं जहाँ टेक का हर देश अपना-अलग रास्ता चुनेगा?

एक सपने का सफ़र

शाओमी का एक्सरिंग 01 सिर्फ़ एक चिप नहीं—यह एक सपने का हिस्सा है। सोचिए, 2,500 इंजीनियर्स, 4 साल तक, दिन-रात एक ऐसे प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं जो दुनिया के सबसे बड़े टेक जायंट्स को चैलेंज करेगा। ये लोग अपने लैब्स में, कॉफी के कप्स के साथ, नए आइडियाज़ टेस्ट कर रहे होंगे, कभी हारते, कभी जीतते। शाओमी के सीईओ, लेई जुन, ने कहा है कि उनका गोल है हर किसी के लिए हाई-टेक प्रोडक्ट्स अफोर्डेबल बनाना। एक्सरिंग 01 उसी विज़न का एक हिस्सा है।

शाओमी का यह चिप एक शुरुआत है। कंपनी अगले 10 साल में 6 बिलियन यूरो और इनवेस्ट करने वाली है, ताकि और बेहतर चिप्स बना सके। यह एक लंबा सफ़र है, जिसमें चैलेंजेस भी होंगे—जैसे अमेरिका के रेस्ट्रिक्शन्स या मार्केट में कॉम्पिटिशन। लेकिन अगर शाओमी इसमें सक्सीड होता है, तो यह न सिर्फ़ चीन के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक नया चैप्टर शुरू कर सकता है।

आपके लिए यह क्या मतलब रखता है? एक दिन, जब आप अपना नया फोन खरीदेंगे, शायद उसमें शाओमी का चिप होगा, जो आपको एक नई स्पीड और एक्सपीरियंस देगा। या शायद, यह चिप आपको याद दिलाए कि एक छोटी-सी कंपनी कैसे बड़े सपने देख सकती है। टेक की दुनिया बदल रही है, और शाओमी का एक्सरिंग 01 उस बदलाव का एक हिस्सा है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

हस्तकला

मेरे घर की औरतें
हाथों से साँस लेती हैं

उनके दाँतों तले आई उनकी ज़बान
हड़बड़ा कर क़दम पीछे हटा लेती है

पलकें अनकहे शब्दों की गड़गड़ाहट
कस कर भीतर बाँध कर रखती हैं

कपड़े तह करते,
फ़र्नीचर की जगह बदलते,

आग से गीली लकड़ी बाहर खींचते,
नारियल तोड़ते

इन हाथों को प्रशिक्षण दिया गया था
इन पर ख़ुदी लकीरों पर चलने का

सालों का सीखा वे भूल नहीं सकीं
पर जो कर सकती थीं वह किया

लकीरों को खुरदुरा और धुँधला कर दिया
उन रेखाओं से जो उनकी कमाई की थीं

जिनकी अब वे मालिक हैं।

ठगी

क्या ही खीझ भरा पल होता है
आप अंदर महसूस कर रहे हों

गूढ़ पेंटिंग-सा कसा हुआ और उन्नत
और शीशे से मिलने पर

एक भयभीत क्षमा-याचना दिख जाए
या तो रेत रगड़ ली जाए चेहरे पर

या नाक बंद कर
कहीं विलीन डुबकी का प्रावधान हो

पर माँ क़सम
इस उधर-इधर के छल को

आज जड़ से मिटाने का
इंतज़ाम कर ही लिया जाए।

अंकिता आनंद

“खेत में भी अब महिलाओं की आवाज़ गूंज रही है”

भारत श्री की टीम ने Dr. Randeep Kaur, विभागाध्यक्ष (HOD), एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट, पंजाब विश्वविद्यालय से विशेष बातचीत की। इस संवाद में उन्होंने पंजाब में महिलाओं की कृषि क्षेत्र में भूमिका, शिक्षा और प्रशिक्षण के ज़रिए बदलती सोच, तथा महिला एंटरप्रेन्योरशिप और सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता पर महत्वपूर्ण विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि कैसे ग्रामीण महिलाएँ अब खेती-बाड़ी से जुड़ी उद्यमिता की ओर कदम बढ़ा रही हैं, और किस प्रकार समाज में बदलाव लाकर उन्हें निर्णयात्मक भूमिका में लाना ज़रूरी है। यह साक्षात्कार कृषि में महिलाओं की स्थिति को समझने और भविष्य की दिशा तय करने में बेहद उपयोगी रहेगा।

पंजाब खेती के लिए जाना जाता है , पंजाब का एग्रीकल्चर बहुत सम्पन्न है, यहाँ की खेती में औरतों का कितना कंट्रीब्यूशन है ?

बिलकुल, आज की महिलाएँ बेहद एंटरप्राइजिंग हैं। असल में, अब जाकर महिलाओं की शिक्षा और विकास में निवेश होना शुरू हुआ है। पहले उनकी शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया, इसलिए वे निर्णय लेने की स्थिति में नहीं थीं और घर तक सीमित रह गईं। अब जब उन्हें अवसर और शिक्षा दोनों मिल रहे हैं, तो वे कृषि से जुड़ी उद्यमिता में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं।

क्या पंजाब की महिलाओं का कृषि में कोई खास योगदान है?

पंजाब एक समृद्ध कृषि राज्य है, लेकिन महिलाओं का सीधा और निर्णयात्मक योगदान अभी भी सीमित है। किसान परिवारों की महिलाएँ आमतौर पर डेयरी से जुड़े काम करती हैं—जैसे मिल्किंग, बटर-घी बनाना, दूध बेचना आदि। लेकिन निर्णय पुरुष लेते हैं। वहीं, लैंडलेस महिलाएँ खेतों में मेहनत करती हैं जैसे सब्ज़ियाँ चुनना, धान की रोपाई। but उनका भी कोई निर्णयात्मक रोल नहीं होता।

क्या यह स्थिति केवल सामाजिक कारणों से है?

हाँ, यह एक गहराई से जड़ी पैट्रियार्कल सोच की वजह से है। पुरुषों को लगता है कि वही बेहतर निर्णय ले सकते हैं। महिलाओं को आज भी पूरी स्वतंत्रता नहीं मिलती, चाहे वे कितनी भी शिक्षित क्यों न हों। अगर जमीन उनके नाम पर नहीं है तो वे निर्णय नहीं ले पातीं।

क्या शिक्षा से स्थिति में बदलाव आ रहा है?

जी हाँ, अब बहुत बदलाव आ रहा है। पिछले 30-40 सालों में लड़कियाँ शिक्षा की ओर आई हैं। हमारी यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाली लड़कियाँ आज ADO बन रही हैं, शिक्षक बन रही हैं, KV स्कूलों में पढ़ा रही हैं, और स्टार्टअप्स भी शुरू कर रही हैं। वे अब लड़कों के बराबर प्रतिस्पर्धा कर रही हैं और बहुत अच्छी प्लेसमेंट पा रही हैं।

क्या सरकार महिलाओं को कृषि स्टार्टअप्स में सहयोग देती है?

हाँ, सरकार और NABARD जैसी संस्थाएँ महिलाओं को सब्सिडी देती हैं, खासकर डेयरी, फूड प्रोसेसिंग, मशरूम कल्टिवेशन, बी-कीपिंग आदि क्षेत्रों में। यदि कोई महिला ट्रेनिंग लेती है, तो उसे लोन पर सब्सिडी और कम ब्याज दर मिलती है। लेकिन कभी-कभी पुरुष सदस्य ट्रेनिंग महिलाओं से

इसलिए करवाते हैं ताकि सब्सिडी मिल सके—फिर व्यवसाय वही चलाते हैं। इससे महिला की स्वतंत्रता बाधित होती है।

क्या कृषि विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहा है?

हमारा सिलेबस ICR (Indian Council of Agricultural Research) द्वारा मान्यता प्राप्त है और इस तरह डिजाइन किया गया है कि छात्र-छात्राएँ न केवल नौकरी पा सकें, बल्कि कृषि में अपना स्वयं का व्यवसाय भी शुरू कर सकें। फाइनल ईयर में वे गांवों में जाकर फील्ड ट्रेनिंग करते हैं और थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल समझते हैं।

क्या डेयरी सेक्टर में महिलाओं के लिए कोई खास संभावनाएँ हैं?

पंजाब में डेयरी सेक्टर अब खेती के बाद सबसे बड़ा इनकम सोर्स बन गया है। हर घर में कुछ न कुछ डेयरी यूनिट है। महिलाओं को अगर न्यू टेक्नोलॉजी और ट्रेनिंग दी जाए तो वे डेयरी को एक मुनाफ़े वाला बिज़नेस बना सकती हैं। हमारी यूनिवर्सिटी में भी उन्हें इकोनॉमिक डेयरी रनिंग के बारे में सिखाया जाता है, ताकि वे खुद कमाई कर सकें।

क्या आज की ग्रामीण लड़कियाँ कृषि को करियर मान रही हैं?

हाँ, अब बहुत सी लड़कियाँ कृषि को एक प्रोफेशन के रूप में ले रही हैं। वो स्टार्टअप्स, डेयरी बिजनेस, एग्री-टेक, और फूड प्रोसेसिंग जैसे क्षेत्रों में आगे आ रही हैं। वे एक्सटेंशन सर्विसेज में जाकर किसानों को ट्रेनिंग दे रही हैं, खुद भी उद्यमिता की राह चुन रही हैं। और सरकार की नई पॉलिसीज़ इस दिशा में उनकी मदद कर रही हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

ब्रह्मांड का जादूगर

प्रोफेसर सुषांत घोष की ब्लैक होल की कहानी

क्या आपने कभी सोचा कि अंतरिक्ष में ऐसी जगह होती है जहां रोशनी भी गायब हो जाती है? जहां समय और स्थान का मतलब बदल जाता है? इसे कहते हैं ब्लैक होल—ब्रह्मांड का वो रहस्य जो वैज्ञानिकों को सदियों से हैरान करता रहा है। और इस रहस्य को सुलझाने में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया (JMI) के प्रोफेसर सुषांत घोष। 2024 में ScholarGPS® ने उन्हें ब्लैक होल रिसर्च में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा वैज्ञानिक घोषित किया। ये कोई छोटी बात नहीं—वो दुनिया के टॉप 0.05% वैज्ञानिकों में हैं! आइए, उनकी कहानी और ब्लैक होल के जादू को आसान शब्दों में समझें, जो आपको ब्रह्मांड की सैर कराएगी।

दिल्ली का सितारा: सुषांत घोष कौन हैं?

दिल्ली की हलचल भरी सड़कों से दूर, JMI के सेंटर फॉर थियोरेटिकल फिजिक्स में प्रोफेसर सुषांत घोष ब्रह्मांड के रहस्यों को कागज और गणित से सुलझाते हैं। उनकी मेहनत और जुनून ने उन्हें दुनिया के सबसे बड़े ब्लैक होल वैज्ञानिकों में से एक बना दिया। ScholarGPS®, जो 20 करोड़ से ज्यादा रिसर्च पेपर्स और 3 करोड़ वैज्ञानिकों का डेटा चेक करता है, ने 2024 में घोष को नंबर दो रैंक दी। इसका मतलब है कि उनके पेपर्स को दुनिया भर में हजारों बार पढ़ा और सराहा गया।

घोष सिर्फ वैज्ञानिक ही नहीं, एक मेंटर भी हैं। उनके स्टूडेंट राहुल वालिया को फुलब्राइट फेलोशिप मिली, जो उनके टीचिंग के जादू को दिखाता है। 2015 में उनकी CTP टीम को प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया विजिटर्स अवॉर्ड भी मिला था। JMI के वाइस चांसलर प्रोफेसर मज़हर आसिफ कहते हैं, "सुषांत की कामयाबी JMI और भारत का गर्व है।" उनके काम ने दिखाया कि भारत के वैज्ञानिक भी दुनिया के साथ कदम मिला सकते हैं। लेकिन आखिर वो क्या रिसर्च करते हैं जो इतनी खास है? चलिए, पहले ब्लैक होल को समझते हैं।

ब्लैक होल: अंतरिक्ष का जादुई गड्ढा

कल्पना करें, अंतरिक्ष में एक ऐसा गड्ढा जो इतना ताकतवर है कि रोशनी तक को निगल लेता है। ये है ब्लैक होल—ब्रह्मांड का सबसे रहस्यमय हिस्सा। इसे समझने के लिए सोचिए, जैसे पानी का भंवर नदी में सब कुछ खींच लेता है, वैसे ही ब्लैक होल अंतरिक्ष में सब कुछ अपनी ओर खींचता है। वैज्ञानिक कहते हैं कि ये तब बनते हैं जब कोई बहुत बड़ा तारा "मर" जाता है और सिकुड़कर एक छोटे, सुपर हैवी पॉइंट में बदल जाता है।

2019 में इवेंट होराइजन टेलीस्कोप (EHT) ने पहली बार ब्लैक होल की तस्वीर खींची—M87* नाम का ब्लैक होल। फिर 2022 में हमारी गैलेक्सी के सेंटर में सैजिटेरियस A* की तस्वीर आई। इन तस्वीरों में ब्लैक होल का "शैडो" दिखता है—एक काला गोला, जिसके चारों ओर रोशनी का रिंग होता है। ये तस्वीरें वैज्ञानिकों के लिए गेम-चेंजर थीं, क्योंकि अब वो अपनी थियरी को टेस्ट कर सकते थे। यहीं पर प्रोफेसर घोष का जादू शुरू होता है।

घोष का जादू: ब्लैक होल के नए राज़

प्रोफेसर घोष ब्लैक होल को समझने के लिए नए-नए तरीके ढूंढ रहे हैं। उनकी रिसर्च को आसान शब्दों में समझें तो वो तीन बड़े सवालों के जवाब तलाश रहे हैं:

ब्लैक होल का "सेंटर" कैसा है? वैज्ञानिक मानते हैं कि ब्लैक होल के बीच में एक "सिंगुलैरिटी" होती है—एक ऐसी जगह जहां सारी चीजें अनंत (इनफिनिट) हो जाती हैं। लेकिन घोष ने "घोष ब्लैक होल" नाम की थियरी दी, जिसमें ये सिंगुलैरिटी नहीं होती। ये थियरी कहती है कि ब्लैक होल का सेंटर इतना अजीब नहीं है, और इसे समझना ब्रह्मांड के नियमों को और बेहतर कर सकता है। उनके इस आइडिया को 125 से ज्यादा रिसर्च पेपर्स में इस्तेमाल किया गया है!

ब्लैक होल की तस्वीरें: EHT की तस्वीरों में जो काला गोला और रोशनी का रिंग दिखता है, उसे "शैडो" और "फोटॉन रिंग" कहते हैं। घोष ने मॉडल बनाए कि अलग-अलग तरह के ब्लैक होल की तस्वीरें कैसी दिखेंगी। उनकी थियरी टेलीस्कोप की तस्वीरों से मिलान करती है, जिससे वैज्ञानिकों को पता चलता है कि ब्लैक होल कैसे काम करते हैं।

क्या आइंस्टीन सही थे? आइंस्टीन की ग्रैविटी थियरी (जनरल रिलेटिविटी) कहती है कि ब्लैक होल का व्यवहार एक खास तरीके से होता है। लेकिन घोष नई थियरी जैसे "मॉडिफाइड ग्रैविटी" पर काम करते हैं, जो कहती हैं कि शायद ग्रैविटी के कुछ नए नियम हों। उनकी रिसर्च EHT की तस्वीरों का इस्तेमाल करके ये चेक करती है कि आइंस्टीन सही थे या कुछ नया सीखने को है।

उनके पेपर्स को 94,000 से ज्यादा बार साइट किया गया है, जो दिखाता है कि दुनिया भर के वैज्ञानिक उनके काम को कितना अहम मानते हैं। वो अपने स्टूडेंट्स और दोस्तों, जैसे राहुल कुमार और शफकत उल इस्लाम, के साथ मिलकर ये कमाल कर रहे हैं।

ये क्यों मायने रखता है?

प्रोफेसर घोष का काम सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं है—ये ब्रह्मांड को समझने की हमारी कोशिश का हिस्सा है। उनकी रिसर्च से हमें पता चल सकता है कि ब्रह्मांड कैसे बना, तारे कैसे मरते हैं, और शायद नए नियम जो टेक्नोलॉजी को बदल सकते हैं। मिसाल के तौर पर, ब्लैक होल को समझने से हमें अंतरिक्ष यात्रा या नई एनर्जी के तरीके मिल सकते हैं।

भारत के लिए ये गर्व की बात है। JMI, जो कभी सिर्फ दिल्ली की यूनिवर्सिटी थी, अब दुनिया भर में फिजिक्स रिसर्च का सेंटर बन रही है। घोष की कामयाबी दिखाती है कि भारत के वैज्ञानिक भी दुनिया के टॉप लेवल पर हैं। ये नौजवानों के लिए इंस्पिरेशन है—अगर आप मेहनत और जुनून से काम करें, तो दिल्ली से लेकर ब्रह्मांड तक कुछ भी नामुमकिन नहीं!

आगे क्या? EHT और ग्रैविटेशनल वेव्स (जैसे LIGO से मिलने वाली) जैसी नई खोजें घोष की थियरी को और टेस्ट करेंगी। शायद वो हमें ब्लैक होल के ऐसे राज़ बताएं जो अभी तक कोई नहीं जानता, जैसे "इन्फॉर्मेशन पैराडॉक्स" (क्या ब्लैक होल में गायब चीजें हमेशा के लिए खो जाती हैं?)। उनका काम हमें ब्रह्मांड के रहस्यों रहस्यों के करीब लाता है, और ये सवाल पूछने की हिम्मत देता है: हमारा अगला कदम क्या होगा?

सितारों की ओर देखें

प्रोफेसर सुषांत घोष की कहानी सिर्फ एक वैज्ञानिक की नहीं—ये हम सबकी कहानी है। हर बार जब हम रात में सितारों को देखते हैं, हम ब्रह्मांड के रहस्यों से जुड़ते हैं। घोष का काम हमें याद दिलाता है कि कोई सवाल छोटा नहीं होता, और कोई सपना बड़ा नहीं। JMI से लेकर दुनिया के टॉप वैज्ञानिकों तक, उनकी जर्नी दिखाती है कि जुनून और मेहनत से कुछ भी हो सकता है।

तो अगली बार जब आप आसमान की ओर देखें, सोचिए—शायद एक ब्लैक होल आपको जवाब दे रहा है। और उस जवाब को ढूंढने में भारत का एक वैज्ञानिक लीड कर रहा है। साइंस को सपोर्ट करें, सवाल पूछें, और ब्रह्मांड की सैर पर निकल पड़ें!

ट्रम्प-मस्क का झगड़ा

दुनिया और भारत पर क्या असर?

दो बड़े नाम, दो बड़ी ताकतें, और एक बड़ा झगड़ा। डोनाल्ड ट्रम्प, अमेरिका के राष्ट्रपति, और एलन मस्क, टेस्ला और स्पेसएक्स के मालिक, कभी एक-दूसरे के दोस्त थे। लेकिन जून 2025 में उनका रिश्ता टूट गया। ये झगड़ा सिर्फ दो लोगों का नहीं, बल्कि पूरी दुनिया और भारत के लिए भी बड़ा सवाल खड़ा करता है। क्या ये सिर्फ एक बिल की वजह से है? या इसके पीछे कुछ और गहरी बातें हैं? इस लेख में हम इस लड़ाई को समझेंगे, इसके पीछे की वजहों को देखेंगे, और सोचेंगे कि इसका दुनिया और भारत पर क्या असर होगा। ये कहानी पावर, विश्वास, और इंसानी कमजोरियों की है, जो हमें ये सोचने पर मजबूर करती है कि सत्ता और महत्वाकांक्षा कब दोस्तों को दुश्मन बना देती है।

"बिग ब्यूटीफुल बिल" और टूटा भरोसा

कहानी शुरू होती है एक बिल से, जिसे ट्रम्प ने "वन बिग ब्यूटीफुल बिल" नाम दिया। ये बिल मई 2025 में अमेरिका की हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में पास हुआ, लेकिन सीनेट में अभी अटका है। इस बिल में टैक्स कट्स, बढ़े हुए टैरिफ, खर्चों में कटौती, और पुराने नियमों को हटाने की बात है। ट्रम्प कहते हैं कि ये बिल अमेरिका को आर्थिक तौर पर मजबूत करेगा और अगले दस साल में 6.6 ट्रिलियन डॉलर की बचत करेगा। लेकिन मस्क को ये बिल बिल्कुल पसंद नहीं। वो इसे "घटिया" और "पॉर्क-फिल्ड" बिल कहते हैं, यानी इसमें बेकार का खर्चा भरा है, जैसे यूक्रेन में लग्जरी होटल्स के लिए फंडिंग। मस्क का कहना है कि ये बिल अमेरिका का कर्ज 600 बिलियन से 3 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ा देगा।

ये बिल सिर्फ पैसे की बात नहीं। इसके पीछे दो लोगों की सोच का टकराव है। मस्क, जो डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी (DOGE) में काम कर चुके हैं, चाहते थे कि सरकार का खर्चा 1 ट्रिलियन डॉलर कम हो। लेकिन ये बिल उनकी सोच के खिलाफ है। ट्रम्प ने कहा कि मस्क को बिल की सारी डिटेल्स पता थीं, फिर भी वो अब नाराज हैं। मस्क ने जवाब दिया कि उन्हें बिल दिखाया ही नहीं गया। ये बातें विश्वासघात की तरह लगती हैं। क्या दोस्ती सिर्फ सत्ता के खेल में टूट गई? इंसान की महत्वाकांक्षा कितनी जल्दी रिश्तों को तोड़ देती है, ये सोचने वाली बात है।

इस बिल ने न सिर्फ ट्रम्प और मस्क को अलग किया, बल्कि इसमें इलेक्ट्रिक व्हीकल (EV) टैक्स क्रेडिट्स को हटाने की बात भी है, जो मस्क की टेस्ला कंपनी के लिए बड़ा झटका है। दूसरी तरफ, ऑयल और गैस सब्सिडी को नहीं छुआ गया, जो ट्रम्प के पुराने बिजनेस दोस्तों को फायदा देता है। क्या ये बिल सिर्फ आर्थिक नीति है, या इसमें निजी हित भी शामिल हैं?

पावर का खेल: झगड़े की असली वजहें

ट्रम्प और मस्क का झगड़ा सिर्फ एक बिल तक सीमित नहीं। इसके पीछे कई और वजहें हैं, जो इस लड़ाई को और गहरा बनाती हैं। पहली वजह है EV टैक्स क्रेडिट्स को हटाना। ये मस्क की टेस्ला के लिए बड़ा नुकसान है, क्योंकि ये क्रेडिट्स ग्राहकों को सस्ती इलेक्ट्रिक गाड़ियां खरीदने में मदद करते हैं। दूसरी वजह है नासा के लिए जैरेड इसाकमैन की नॉमिनेशन का रद्द होना। जैरेड मस्क के करीबी दोस्त हैं, और ट्रम्प ने उनकी नॉमिनेशन वापस ले ली, जिससे मस्क और नाराज हो गए। तीसरी बात, मस्क का DOGE से हटना। मई 2025 में मस्क ने DOGE छोड़ दिया, और उसके बाद उनकी ट्रम्प के खिलाफ बयानबाजी बढ़ गई। क्या ये पावर का खेल था? मस्क ने DOGE में रहते हुए 1 ट्रिलियन डॉलर की कटौती की बात की थी, लेकिन बिल उनकी सोच के खिलाफ था। क्या मस्क को लगा कि ट्रम्प ने उनके साथ धोखा किया?

एक और बड़ी वजह है दोनों की बड़ी इगो। ट्रम्प और मस्क, दोनों ही ऐसे लोग हैं जो हमेशा लीड करना चाहते हैं। जब दो बड़े इगो टकराते हैं, तो दोस्ती टूटना लाजमी है। मस्क ने X पर ट्रम्प को "एप्सटीन फाइल्स" में होने का इल्जाम लगाया, जो एक गंभीर और बिना सबूत का दावा है। ट्रम्प ने जवाब में मस्क को "पागल" कहा और उनके सरकारी कॉन्ट्रैक्ट्स खत्म करने की धमकी दी। ये लड़ाई अब पर्सनल हो गई है।

मस्क का कहना है कि उन्होंने ट्रम्प को 2024 का इलेक्शन जिताने में 250 मिलियन डॉलर खर्च किए। ट्रम्प कहते हैं कि मस्क को बिल की पूरी जानकारी थी। ये बातें विश्वासघात की कहानी बयान करती हैं।

एप्सटीन केस और रहस्यमयी "कैलेंडर गर्ल्स"

मस्क ने X पर दावा किया कि ट्रम्प "एप्सटीन फाइल्स" में हैं, और इसीलिए फाइल्स को पब्लिक नहीं किया गया। जेफ्री एप्सटीन एक फाइनेंसर थे, जिन्हें 2019 में सेक्स ट्रैफिकिंग के लिए अरेस्ट किया गया था। उनकी 2019 में जेल में आत्महत्या से मौत हो गई। एप्सटीन बड़े-बड़े लोगों के साथ दोस्ती रखते थे, जिसमें ट्रम्प और बिल क्लिंटन जैसे नाम शामिल हैं। ट्रम्प ने एप्सटीन के प्राइवेट जेट में सात बार उड़ान भरी, लेकिन उनके खिलाफ कोई क्राइम का सबूत नहीं है। मस्क का दावा बिना सबूत का है, और ट्रम्प ने इसे खारिज किया है।

"कैलेंडर गर्ल्स" का जिक्र शायद एक गलतफहमी है, क्योंकि इसकी कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिली। ये शब्द शायद एप्सटीन के पीड़ितों या मीडिया की सनसनीखेज कहानियों से जुड़ा हो सकता है। कुछ X पोस्ट्स में एशले सेंट क्लेयर का जिक्र है, जो मस्क के बच्चे की मां हैं और उन्होंने इस झगड़े पर मजाकिया कमेंट किया था। लेकिन "कैलेंडर गर्ल्स" का कोई ठोस कनेक्शन नहीं दिखता।

मस्क को DOGE में काम करते वक्त कुछ गोपनीय जानकारी मिली हो सकती है, जैसे सोशल सिक्योरिटी रिकॉर्ड्स, जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने 6 जून 2025 को ऐक्सेस की इजाजत दी थी। लेकिन उनके पास ट्रम्प के खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं दिखता। फिर भी, उनका ये दावा कि "सच सामने आएगा" हमें सोचने पर मजबूर करता है। क्या सच में कोई बड़ा राज है, या ये सिर्फ पावर गेम का हिस्सा है? इंसान का सच ढूंढने का जुनून और सच को छुपाने की कोशिश, दोनों ही हमें ये सोचने पर मजबूर करते हैं कि सच्चाई कितनी कीमती है।

दुनिया पर असर: एक टूटी दोस्ती का ग्लोबल इम्पैक्ट

ट्रम्प और मस्क की लड़ाई सिर्फ अमेरिका तक सीमित नहीं। इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। टेस्ला का स्टॉक 5 जून 2025 को 14-15% गिर गया, जिससे 150-152 बिलियन डॉलर का नुकसान हुआ। ट्रम्प की धमकी कि वो स्पेसएक्स और टेस्ला के कॉन्ट्रैक्ट्स खत्म करेंगे, मस्क की कंपनियों को और खतरे में डाल सकती है। स्पेसएक्स नासा और पेंटागन के लिए जरूरी है। अगर मस्क ने ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट डीकमिशन किया, तो अमेरिका के अंतरिक्ष प्रोग्राम को झटका लगेगा, जिससे चीन जैसे देशों को फायदा हो सकता है।

ट्रम्प के टैरिफ्स ने 8 अप्रैल 2025 को ग्लोबल मार्केट्स को ट्रिलियन्स का नुकसान पहुंचाया। कनाडा और यूरोप जैसे देशों पर नए टैरिफ्स से ट्रेड टेंशन बढ़ गया है। मस्क की नई "अमेरिका पार्टी" की बात, जिसके लिए X पर 80% लोगों ने सपोर्ट किया, अमेरिका की पॉलिटिक्स को हिला सकती है। अगर रिपब्लिकन पार्टी टूटती है, तो अमेरिका की ग्लोबल ताकत कमजोर हो सकती है, और चीन-रूस जैसे देश इसका फायदा उठा सकते हैं।

क्लाइमेट पॉलिसी भी खतरे में है। EV सब्सिडी हटने से इलेक्ट्रिक व्हीकल्स में इन्वेस्टमेंट कम हो सकता है, जिससे ग्लोबल क्लाइमेट गोल्स को नुकसान होगा। मस्क का X, जिसके 220 मिलियन फॉलोअर्स हैं, ग्लोबल ओपिनियन को प्रभावित कर सकता है। लेकिन क्या ये लड़ाई दुनिया को बेहतर बनाएगी, या सिर्फ अराजकता लाएगी? इंसान की लड़ाई कितनी बार बड़े मकसद को भूल जाती है, ये सोचने की बात है।

भारत पर छाया: क्या हम तैयार हैं?

भारत के लिए ये झगड़ा बड़ा मसला है। स्टारलिंक, मस्क की सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस, भारत में तीसरा लाइसेंसी बनने वाली थी। लेकिन इस लड़ाई से स्टारलिंक की लॉन्चिंग में देरी हो सकती है, जो भारत के रूरल कनेक्टिविटी के लिए बड़ा झटका है। H-1B वीजा, जो 70% भारतीय प्रोफेशनल्स इस्तेमाल करते हैं, खतरे में है। ट्रम्प की सख्त इमिग्रेशन पॉलिसी भारत के IT सेक्टर को नुकसान पहुंचा सकती है।

ट्रम्प के टैरिफ्स ने 2 अप्रैल 2025 को भारतीय सामान पर टैक्स बढ़ाया, जिससे भारत के बिजनेस और कंज्यूमर्स को नुकसान होगा। टेस्ला की गाड़ियां भारत में महंगी हो सकती हैं, जिससे EV मार्केट की ग्रोथ रुक सकती है। भारत की डिफेंस और टेक्नोलॉजी डील्स, जो मस्क के लॉबिंग से फायदा उठाती थीं, अब रुक सकती हैं।

भारत को अब सावधानी से चलना होगा। नरेंद्र मोदी ने 2024 में मस्क से मुलाकात की थी, और मस्क ट्रम्प के लिए एक ब्रिज थे। अब भारत को ट्रम्प के साथ डायरेक्ट डील करना होगा, जैसा कि विदेश मंत्री जयशंकर कर रहे हैं। भारत को EU और क्वाड जैसे पार्टनर्स के साथ रिश्ते मजबूत करने होंगे, ताकि अमेरिका की अस्थिरता का असर कम हो। क्या भारत इस मौके को अपने फायदे में बदल सकता है, या हम सिर्फ नुकसान उठाएंगे? ये सवाल भारत के भविष्य को लेकर गहरी चिंता पैदा करता है।

इंसानियत का सबक

ट्रम्प और मस्क का झगड़ा सिर्फ दो लोगों की लड़ाई नहीं। ये पावर, विश्वास, और महत्वाकांक्षा की कहानी है। एक बिल ने दो दोस्तों को दुश्मन बना दिया, और इसका असर दुनिया और भारत पर पड़ रहा है। क्या ये लड़ाई सिर्फ इगो की है, या इसके पीछे कोई बड़ा प्लॉट है? डिप्लोमैटिक नजरिए से ये एक पॉलिसी और पर्सनल टकराव है, न कि कोई खतरनाक साजिश। लेकिन इसका असर—मार्केट क्रैश, स्पेस प्रोग्राम्स का रुकना, और भारत में स्टारलिंक की देरी—हमें सोचने पर मजबूर करता है।

इंसान की चाहत सत्ता और पावर की कितनी बड़ी कीमत चुकाती है? क्या दोस्ती और विश्वास इनके सामने टिक सकते हैं? ये झगड़ा हमें अपने रिश्तों, अपने देश, और अपने मकसद पर सवाल उठाने को मजबूर करता है। भारत को अब स्मार्टली चलना होगा, ताकि इस अराजकता में भी हम अपने रास्ते पर आगे बढ़ सकें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

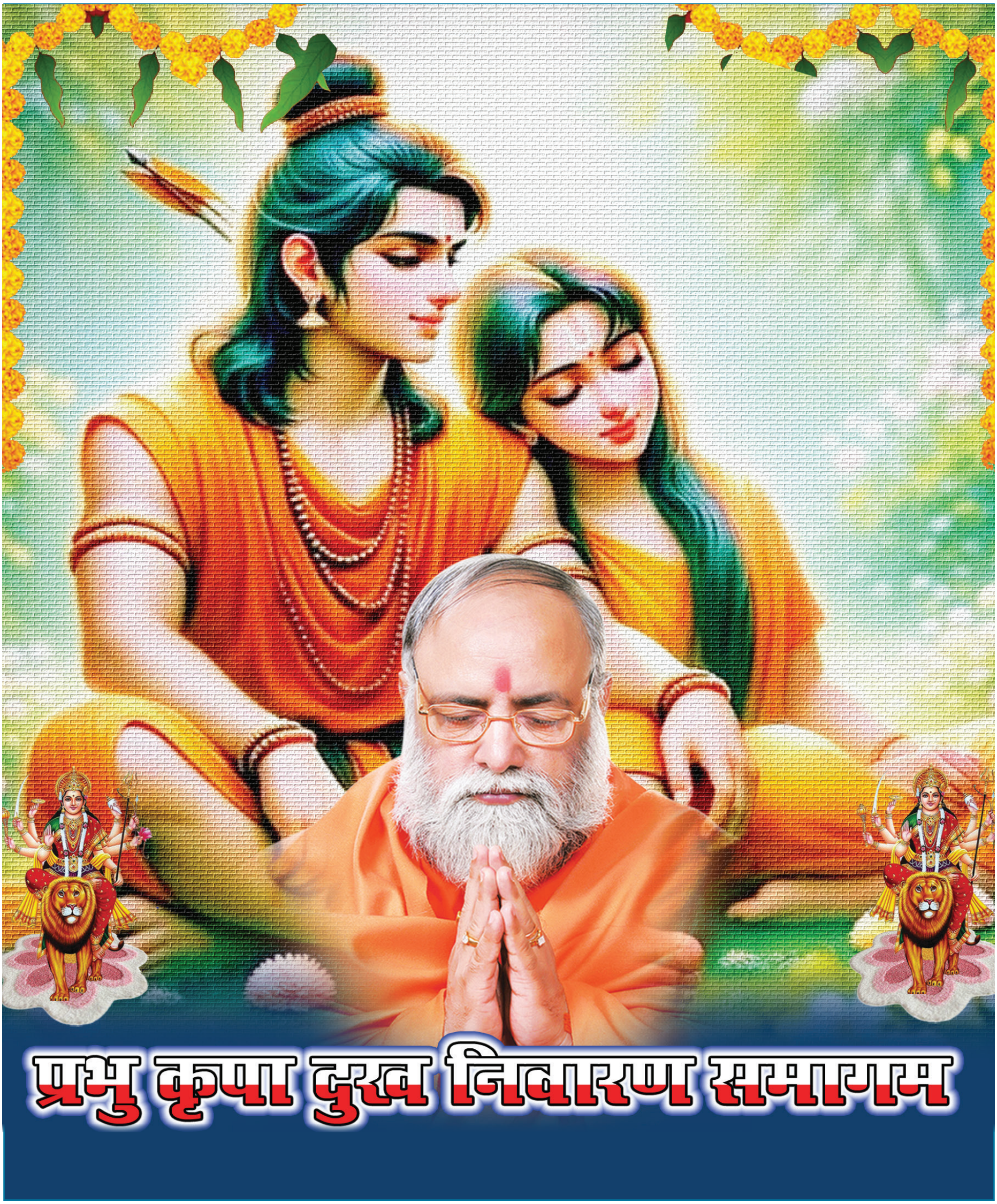

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries